

लौंगिया मिरचाइ

(मैथिली नाटक)



लल्लन प्रसाद ठाकुर



भवानी प्रकाशन
पटना

तुतीय अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाट्य-लेखन प्रतियोगिता
मे प्रथम स्थान प्राप्त

लौंगिया मिरचाइ

(मैथिली नाटक)

लेखक

ललन प्रसाद ठाकुर



भवानी प्रकाशन

पटना, दरभंगा

“लौगिया मिरचाइ”

प्रथम मंचन : भारतीय नृत्य कला मंदिर, पटना

१० अप्रील १९८६

दोसर मंचन : रवीन्द्र भवन, जमशेदपुर

३० जनवरी १९८७

पुरुष पात्र प्रथम/दोसर मंचनक कलाकारगण

- १ घुटर — लल्लन प्रसाद ठाकुर
- २ दिवाकर — चन्द्रकान्त
- ३ फुकना — रूप नारायण झा
- ४ मास्टर — देवचन्द्र झा/मोहन झा
- ५ नरेन्द्र — मोहन झा/पूणनिन्द झा
- ६ गेना — कुमार भास्कर/अमितेश कुमार
- ७ प्रो० चन्द्रकान्त — रतीश चन्द्र मिश्र

स्त्री पात्र

- १ स्त्री — कुमारी अनमना/कुमारी मधु झा
- २ रीता — कुमारी अनीता मिश्रा
- ३ रश्मियाँ — कुमारी रश्मी रेखा/कुमारी नमिता

निर्देशक — लल्लन प्रसाद ठाकुर

सह निर्देशक — रतीश चन्द्र मिश्र

मंच व्यवस्था — (श्रीमती) कुसुम ठाकुर

प्रकाश संयोजन — पूणनिन्द झा/जी विश्वनाथ

संगीत

— ‘श्री राजा’

पहिल दृश्य

(स्थान पोखरि क मोड़)

(घूटर बाबू पोखरि सँ स्नान केने खूब जोर-जोर सँ दुर्गा पाठ करत धलल आबि रहल छथि । कारक हानक स्वर सुनि चोकि पढ़त छथि ।)

घूटर — ओय... इ कार सँ के आबि रहल अछि ? आइ-काहि एहि गामक तऽ भाग्ये बदलि गेल छैक । रोज़ क्योने क्यो कार कि जीप सँ अबिते रहैत अछि... आ' इ मास्टर अछि जे नाक पर माछी नहि बँसऽ दैत छै (जोर सँ चिकड़ि कऽ) ओजी... गाढ़ी ओतहि छोड़ि दियो... आगू रस्ता नहि छैक... हँ... हँ ओतहि कात मे लगा दियो... । (पुनः जोर-जोर सँ दुर्गा पाठ करऽ लगैत छथि । दोसर दिस सँ दिवाकर बाबूक एक हाथ मे बीक-केस नेने प्रवेश ।)

दिवाकर — नमस्कार पंडित जी ।

घूटर — नमस्कार । कहल जाओ... ककरा ओतऽ जेबाक अछि ? रखनन्दन मास्टरक ओतऽ की ?

दिवाकर — जी... हम... घू... (मोन पारऽ चाहैत छथि... फेर जेब सँ एकटा चिट्ठी निकालि ओहि पर लिखल नाम पढ़ैत छथि)

घू... टर... टर बाबू ओतऽ जाय चाहैत छी ।

घूटर — दुर्गा... दुर्गा... ओजी... एहि गाम मे इ घू आ टर माने कि घूटर तऽ मात हमहीं छी...

दिवाकर — ओह... चिन्हि नहि सकलौ... नमस्कार... नमस्कार...

घूटर — ओजी ई नमस्कार नमस्कार तऽ कँक बर भऽ गेल परन्च, हम तऽ अपने केँ चिन्हल नहि ?

दिवाकर — जी पहिल बेर जे भेट भऽ रहल अछि... दरअसल हम अपनेक सार...

घूटर — दुर्गा... दुर्गा... ओजी अपने हमर सार कोना ? हमर तऽ मात एकेटा सार छथि... फ... दन्नऽऽ माने कि फूदन बाबू... अररिया मे पी डल्लू डी आफिस मे बड़ा बाबू छथि... खूब पाइ कमाइत छथि...

गाम मे कोठापिटने छथि "बेटीक बियाह मे पचास हजार टाका गनलनि अछि । ओजी दू मास पहिने तऽ भेट भेल छल" तऽ कहैत छलाह हम तऽ मात्र ईमानदारीक पाइ घूस मे लैत छी । आ कहैत छलाह जे हुनकर जे साहेब छथिन "कोनदन इन्जीयर तऽ कहलनि

दिवाकर—जी एकजवयूटिभ इन्जिनियर

घूटर —हं—हं वैह "हुनका दऽ तऽ कहैत छलाह जे एक नम्बरक घूसाह छथि । रिक्केदार सभक खून चूसै लैत छथि । सरकारी सिमटी लोहा सब बेच कऽ खा जाइत छथि ।

दिवाकर—जी ? फूदन बाबू ई सभ कहैत छलाह ?

घूटर —हं यौ ई सभ तऽ वैह कहैत छलाह । हम की जानऽ गेलियँ ओजी । आहिरेबा हमहूँ कतऽ भसिया गेल रही "ओजी हम पुछैत रही जे अपने "सार"

दिवाकर—जी अपने तऽ हमर पूरा गप सुनबे नहि कैल "खैर इ पत्र पढ़ल जाओ (चिट्ठी दैत छथि)

घूटर —ओजी हमरा लग मे कि चरमा अछि जे चिट्ठी पढ़ब । अपनहि पढ़ि कऽ सुनाउ "दुर्गा" "दुर्गा"

दिवाकर—जी वेश । (चिट्ठी पढ़ैत छथि) प्रिय घूटर बाबू, नमस्कार ।

घूटर —नमस्कार ...नमस्कार

दिवाकर—जी ?

घूटर —आगू पढ़ल जाओ ।

दिवाकर—जी "। पत्रवाहक हमर एकजवयूटिभ इन्जिनियर साहेब श्री दिवाकर बाबू छथि ।

घूटर —जी ! अपने दिवाकर बाबू "दुर्गा" "दुर्गा" जी हम चिन्हि नहि सकलौ अनाप-सनाप बजा गेल ।

दिवाकर—कोनो बात नहि । आगू सुनल जाओ (पुनः पत्र पढ़ैत छथि) हिनकर सज्जनता भलमनसाहतक कोनो दोसर उदाहरण नहि भऽ सकैत अछि । साहेब अपन बेटीक लेल मास्टर साहेबक भाई नरेन्द्र पर कथा लऽ कऽ जा रहल छथि । नरेन्द्र इनकम टैक्स आफिसर भऽ रहल छथि । हुनको

लेल अहि सँ बढ़िया आओर कोनो कथा नहि भऽ सकैत छनि । हमर साहेबक बेटी रीता परम शुशीला, गृह कार्य मे दक्ष एवं बी० ए० पास छथि । कन्याक लेल हम गरेन्टी लैत छी । आशा अछि अपने ई कार्य सम्पन्न कराय पुण्यक भागी बनब । हमर साहेब लग पाइक कोनो कमी नहि । कार्य भऽ गेला पर साहेब अहाँके उचित कमिशन देता ।

अहाँक;

फूदन

घूटर —हैं हैं हैं की कहूँ हमर जे ई एक मात्र सार छथि से एक नम्बरक पाबी । कमिशन देताह "हूँ....

दिवाकर—घूटर बाबू एहि लेल तामस जुनि कैल जाय ।

घूटर —ओजी ई सार तऽ एहो लिख सकैत छलाह जे कार्य भऽ गेला पर उत्तम स्वागत सत्कार करताह "

दिवाकर—सैह बृक्षल जाय "उचित स्वागत सत्कारे बृक्षल जाय (जेब सँ दू सय टाका बहार कऽ दैत) ताघरि ई राखल जाओ ।

घूटर —(टाका लैत) दुर्गा "दुर्गा या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मी रूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः । अब तऽ दुर्गाक आशीर्वाद भऽ गेल अछि बाबू तऽ अपनेक लेल किछु ने किछु करऽ पड़त "

दिवाकर—ओ किछु नहि "कार्य अवश्य भऽ जाय सैह कैल जाओ ।

घूटर —ओजी "ई मास्टर घाघ अछि "कतेको लोक आवि कऽ चलि गेल "केकरो नहि सुनलकनि । मुख्यमन्त्रीक आदमी सेहो हुनकर भतीजीक लेल आयल छलनि "

दिवाकर—ओह ! सुनैत छी जे मास्टर साहेब एकोटा पाइ नहि लेयिन भाईक विवाह मे ।

घूटर —ओ कहैत तऽ सैह छैक सभ के । परन्च हमने चिन्हैत छियँ ओकरा । बड़का भितर घुइयाँ अछि ई मास्टर "खैर बचि कऽ जैत कतऽ दुर्गा दुर्गा "अच्छा दिवाकर बाबू अपने कतेक टाका तक गनि सकैत छियँ ।

दिवाकर—जी पाइक कोनो चिन्ता नहि "काज जैना हेतै तेना कैल जैत कथुक कमी नहि रहतनि ।

घूटर —अँय "तथापि कतेक तक "?

दिवाकर—डेढ़-दू लाख कैश लऽ लौथ...तकरा बाद तऽ विदाई मे आधुनिक सभ समान मोस्ट माडन एण्ड मोस्ट सफिस्टीके टेड...

घूटर —डेढ़ दू लाख ! दुर्गा दुर्गा ओजी दिवाकर बाबू एकटा बात पूछू अघलाह तऽ नै मानव ?

दिवाकर—पूछू—पूछू

घूटर —अपनेक विषय मे हमर सार जे कहने छलाह से तऽ सत्ते बुझाईत अछि...

दिवाकर—जी...अहिना चलैत छै। अपने ध्यान कार्य दिस लगायल जाओ। लाख-दूलाखक चिन्ता जुनि करू...

घूटर —दुर्गा...दुर्गा हे मां दुर्गा...अहि जनम मे तऽ जरलाहा कप्पार देलह अगिला जनम मे हमरो पी० डब्लू डी० क इन्जियर बना दिहऽ...

दिवाकर—हैं हैं हैं अपने तऽ अद्भुत लोक छी यौ घूटर बाबू...

घूटर —अद्भुत लोक की ? ओजी अपनेक गप सुनि कऽ हमर तऽ हृदासे उड़ि गेल अछि...अँयओ एकटा गप हमरा नहि बुझायल ? अपने एतेक टाका गनि सकैत छी... लवच कऽ सकैत छी...तखन फेर एहन दरिद्र छिम्मरि बर अपना बेटी लेल सकैत छी ? ओजी मास्टर दूनु भाईक माथ पर दस कट्ठा सँ बेसी जमीन नहि...एकटा छोटछीन टाटक घर। जाहि मे अपनेक बँसबोक स्थान नहि तऽ ओहि मे अपनेक बेटी कोना रहलीह ? मास्टर आ' ओकर घरवाली कोना कोना अपन पेट काटि कऽ नरेन्द्र के पदोलक अछि से पूरा गाम जनैत अछि। ओ एतेक टाका मे तऽ अपने कोनो जमीनदारक बेटी...

दिवाकर—अपने बुझबैं ओ घूटर बाबू...। ट्रेनिंग खतम भेलापर नरेन्द्र भऽ जेत ह इन्कम टैक्स आफिसर...आ तीन चारि बरखक बाद ओ हमरा सन-सन कैकटा इन्जीनियर के कीन कऽ अपनपाकेट मे राखि सकैत छथि...

घूटर —तेहेन साहेब भऽ गेल अछि नरेन्द्र ?

दिवाकर—जी...

घूटर —तँ ने, एतेक लोक मारि कऽ रहल अछि परन्च एकटा बात...लाख-दू-लाखक गप बिसरियोबऽ दोसरा लग नहि बाजब। हे, हम मात्र ४०-५०

हजारमे ई काब करदेब...लाख-दू-लाख मुनिताहि मास्टर तऽ पागल भऽ जेत।

(फूकनाक छिट्टा आ हाँसू नेने प्रवेश)

फूकना—गोर लगै छी लौगिया मिरचाई पंडित। बलु के पागल भऽ जेत ?

घूटर—हे रे फूकना तो मुँह सम्हारि कऽ बाजल कर, नहि तऽ कोनो दिन टाँग हाथ तोड़ि कऽ घऽ देबौ...

फूकना—गलती भऽ गेल भाफी दऽ दिय, बलु ई मोटरगाड़ी दूला पाहुन कतऽ सँ एलाह अछि ?

घूटर—कतौ सँ एलाह अछि ताहि सँ तोरा की ? जो अपन काज कऽर (फूकनाक मुँह बिचकावैत प्रस्थान) हैं हैं हैं ई सभ अपने जन-बनिहार पीक।

दिवाकर—से तऽ हम बूझि गेल। परन्च, ई तऽ अपने के अद्भुत संबोधन देलक "लौगिया मिरचाई पंडित"।

घूटर—जी...जी...दर असल हमरा बाड़ीमे ततेक ने लौगिया मिरचाई फड़ैत अछि जे गामक सभ तोड़ि-तोड़ि कऽ लऽ जाइत अछि। हैं...हैं...हैं...मिरचाइये छँक, ककरा रोकबैं, लऽ जो जतेक लऽ जेबैं, कड़ू तऽ तोरे लगती...हैं...हैं...हैं...खैर आब चलल जाओ पूजा पाठ कऽ लैत छी तखन मास्टरक ओतऽ चलल जेत...चलल जाओ—घबराऊ जुनि...घूटर अपनेक संग छथि माने दुर्गा अपनेक संग छथि। अपनेक काज हेबैं करत।

दिवाकर—दुर्गा संग छथि कि लौगिया मिरचाई ?

घूटर—हैं...हैं...हैं...अपने तऽ हमर सारे जकाँ भसखरी कऽ लगलीं, हैं...हैं...हैं...चलल जाओ।

(दूनुक प्रस्थान । प्रकाश बन्न)

दोसर दृश्य

(मास्टरक घरक दलान । एकटा फूसक घर । एकटा टूटल कुर्सी आ एकटा खाट । मास्टर प्रवेश करैत छथि । आवि कऽ झोड़ा कुर्सी पर टंगैत छथि आ कुर्सी पर बैसि रहैत छथि)

मास्टर—फूकना...फूकना...

मास्टरक स्त्री—(प्रवेश) फूकना तऽ भारे जे घास काटऽ गेल से कहाँ आयल अछि ।

मास्टर—इहो फूकना हूँ अछि । एकर बेटा के हूँ पढ़ा की दैत छियँ ई तऽ भरि दिन हमरे समक काज करैत रहैत अछि । एकर घर कोना चलैत छै से नहि जानि ।

स्त्री—सैह तऽ...कतेक इच्छा छै एकरा जे बेटा पढ़ि-लिख कऽ पैघ आदमी बनई । गेना तऽ छँहो बड़ तेज ...

मास्टर—ताहिमे कोन सन्देह...एहन संस्कारी बच्चा तऽ बहुत कम देखबामे अबैत अछि । हे...एकटा बात गिरह बान्हि कऽ राखि लिय जे जँ भगवतीक कृपा रहलनि तऽ ई छौड़ा हमर नाम रोशन करत । नरेन्द्र जे नहि कऽ सकलाह से करत ई छौड़ा ।...कोनो चिट्ठी तिठ्ठी ?

स्त्री—नहि कहाँ आयल अछि ।

मास्टर—नरेन्द्र के चिट्ठी लिखना तऽ कतेक दिन भऽ गेल । जबाब किएक नहि दऽ रहल छथि...कन्यागत सभ तंग कऽकऽ छोड़ि देने अछि । लाख कहैत छियँ जे हम पाइ नञि लेब से कथो लेल मानत क्यों... लगैत अछि जेना जबर्दस्ती जेवमे ठूसि देत, पचास हजार, साठ हजार...लाख...दू लाख ...

स्त्री—तऽ, नहि जानि कतऽए एतेक पाइ आवि गेल छै लोक सभकेँ ? तँयो तऽ सभ दिव हाहाकार मचल अछि । दहेजसँ लोक तबाह अछि ।

मास्टर—यँ तबाह अछि निधन सभ...तबाह अछि इमानदारीक पाइ खायबला सभ । ओ किएक तबाह रहत जकरा घूसक पाइ अफरात भेटैत छैक... ओ किएक तबाह रहत जकरा ठिकेदारी मे कि व्यापार मे दू नम्बरक

पाइक ढेर लागल रहैत छैक ? अहि देशमे एकटा एहन बग तँयार भऽ गेल अछि जकरा लग दू नम्बरक पाइक कोनो हिसाब नहि आ बँह सभ ई दहेज के एतेक बड़ा चढ़ा देलक... जहाँ कोनो नीक लड़का निकलल कि बोली लागऽ लगैत अछि...लाख दू लाख नहि जानि आओर कतेक । ओकरा समक सौझा मे ई गरीबहा सभ कतऽ सकत । फलेही ओकर बेटी कतबो मुन्नरि किएक नहि हो, कतबो पढ़ल-लिखल, शुशील किएक नहि हो । जनैत छी आइ जे हम डिक्लेअर कऽ दियँ जे नरेन्द्रक विवाहमे हमरा पाइ चाही तऽ डेढ़-दू लाख तक दै बला समक लाइन लागि जायत...

स्त्री—दूर...एहनो क्यों काज करय ।

मास्टर—अरे हम तऽ एकटा गप कहल । हम तऽ विवाहमे लेन-देनक घोर विरोधी छी ।...नरेन्द्रक चिट्ठी आवि जाइत तऽ कोनो नीक ठाम विवाह स्थिर कऽ दितियँ । मात्र एकटा इच्छा अछि जे विवाह कोनो पैघ आफिसरक ओतऽ होनि ।

स्त्री—हे...हम तऽ कहय जे अहाँ इहो पागलपन छोड़ि दिय । कोनो गरीब घरक बेटी ताकि कऽ बीआक विवाह कऽ दियौन ।

मास्टर—जतवे वृक्षबै ततवे ने बाजय...यँ, विवाहदान मे स्टेटस देखल जाइत छैक । नरेन्द्र पैघ अफसर छथि तऽ हुनकर स्त्री पढ़ल-लिखल, तौर-तरीका बाली, सभा-सोसाइटी मे नरेन्द्रक संग देबयवाली होयबाक चाही । ओ कि हमरा जँका मास्टर छथि जे कोनो मास्टरक बेटी सँ ठीक कऽ दियनि ।

स्त्री—हमर बाबूजी मास्टर नै हेंड मास्टर छथि ।

मास्टर—ओफको—अरे जहिया ओ नोकरी पकड़ने हेता तहिया तऽ मास्टरे ने रहल हेता कि सोझे हेडमास्टरे भऽ गेल छलाह ?

स्त्री—से तऽ हमरा नहि वृक्षल अछि ।

मास्टर—अहाँ बकलेल छी...जाइ एक कप चाह बनाकऽ नेने आउ...

स्त्री—हँ-हँ...हम तऽ बकलेल छी । बीआ तऽ अहाँक ने भाई अथि । तँ सभ अधिकार अहाँकेँ...

मास्टर—आ-हा-हा, अहाँ तऽ खिसिया गेलहुँ । नरेन्द्र जे आदर जे सम्मान अहाँके दैत छथि ओ तऽ... हमरा तऽ मात्र पैघ भाई बुझैत छथि परन्च अहाँके तऽ सदखन माय समान पुजा करैत छथि । अहाँ जतऽ कहवै तरी हेतैन नरेन्द्रक विवाह । हम तऽ मात्र नरेक स्टेटसक हिसाबे..."

स्त्री—हम को बुझवै ई सब बात । अहीं सोचि बिचारि कऽ तय करव । हम चाह मेने अबैत छी (प्रस्थान)

(गेना लालक प्रवेश)

गेना—(चिट्ठी दैत) मास्टर साहेब प्रणाम ! पोस्टमैन साहेब ई चिट्ठी देलनि अछि ।

मास्टर—चिट्ठी ला-ला हे ई तऽ नरेक चिट्ठी अछि (फाड़ैत) गेना, तौ कने अपन बाबू के बजौन तऽ ओ..."

गेना—जी... (प्रस्थान)

मास्टर—(चिट्ठी पढ़ैत) यै सुनैत छी... अरे जल्दी आउ

(स्त्रीक प्रवेश)

अरे नरेन्द्रक चिट्ठी आवि गेल, जनेत छी की लिखने छथि...? लिखलनि अछि अहि मासक अंत धरि हमर पोस्टिंग भऽ जैत । आव हमर विवाह निश्चित कऽ सकैत छी । भाई अहाँ तऽ पिता तुल्य छी आ भीभी तऽ मायो सँ बड़ि कऽ । अहाँ लोकनि हमर विवाहक लेल हमरा सँ पूछी से उचित नहि । जतऽ उचित बूझी, रहिया उचित बूझी निश्चित कऽ दिय । देखू अहाँक बीआ कतेक आज्ञाकारी छथि ।

स्त्री—से अहाँ ने देखू । तैं खूब सोचि-बिचारि कऽ विवाह ठीक करियौन ।

जाहि सँ नीक जैका जिनगी ब्रैत जाइन..."

मास्टर—हैं से तऽ ठीके कहैत छी... अहि पत्रके पढ़लाक बाद तऽ जिम्मेदारीक बोझ आओर बढ़ि गेल अछि । खैर, बाबा बैद्यनाथ सभ नीके करताह..."

(नेपथ्य सँ घूटरक स्वर)

घूटर—दुर्गा... दुर्गा... ई बाबा बैद्यनाथ के किएक तंग कऽ रहल छहुन हो मास्टर ?

मास्टर—घूटर भाई आवि रहल छथि (स्त्रीसँ) अहाँ आऊन जाउ । (स्त्रीक प्रस्थान) आउ-आउ घूटर भाई..."

(घूटर आ दिवाकर बाबूक प्रवेश । दिवाकर बाबूक संगमे श्रीफ-केश छनि । ओ मास्टर साहेब के नमस्कार करैत छथि ।)

मास्टर—नमस्कार नमस्कार... एतऽ बैसल जाओ । (आ अपने छाट पर घूटरक संग बैसि जाइत छथि)

घूटर भाई हिनका चिन्हलियैन नजि ?

घूटर—हो, आइ काल्हि तौ ककरो चिन्हैत छहक । हमरा चिन्हैत छह कि नजि ?

मास्टर—कह तऽ भला... अहाँ तऽ..."

घूटर—तऽ बूझि लऽ जे हिनका आ हमरामे कोनो फर्क नहि । हमर सार के चिन्हैत छहुन ने ?... हुनके ई साहेब दिवाकर बाबू एजकूटी इनजीयर पी डब्लु डी । हुनके पत्र लऽ कऽ आयल छथि । कार सँ बयलाह अछि । पोलरिफ भीड़ लग छोड़ि देने छथिन कार के । हमर सार तऽ अपने आबयबला रहथि हिनका संग परंच ओ अकस्मात बिमार पड़ि गेलाह... हे नरेन्द्रक हेतु अपन कान्याक प्रस्ताव लऽ कऽ आयल छथि ।

मास्टर—ओ..."

दिवाकर—जी ई हमर परिचय थीक (जेबसँ कागत बहार कऽ दैत छथि)

घूटर—परिचय की देखैत छहुन... एहन सुन्नर परिचय कतऽ भेटतह ?

दिवाकर—मास्टर साहेब... दरअसल हम भाया मिडिया बला गपमे विश्वास नहि करैत छी । आ नजि तऽ दस-बीस आदमीक भीड़ जमा करवामे । चाही तऽ जतऽ कथामे जाइ हू-चारिटा गाड़ी आ दस बीस नीक व्यक्ति केँ लऽ कऽ जा सकैत छी परन्च, हम बुझैत छियै जे..."

मास्टर—जी ई तऽ बड़ उत्तम गप । कन्यागत आ बरागत सोशा सोझी बैसि कऽ गप करथि तऽ ई जे पचास तरहक प्रेसर, कि सम्बन्धी वगैर सँ मनमुटाव से सब काफी हद तक दूर भऽ सकैत अछि ।

दिवाकर—बाह । बहुत उत्तम विचार । तखन हम तऽ अपने लग अर्जी दऽ देल... आब अपनेक जे विचार..."

घूटर—जे विचार की ? अहिसँ बढ़ियाँ कथा कतऽ भेटतऽ ? कान्याक विषय मे हमर सार गरेन्टी लिख कऽ पठीलनि अछि । परम शुशीला, गृह कायमे दक्ष, बी० ए० पास बढ़ियाँ रिजल्ट... देखवामे अति सुन्नर... बाप के

देखते छहून*** वड़का आफिसर***कथुक कमी नजि, जे मंगवहुन से सभ देवाक लेल तयार***

मास्टर—(तमसाइत) घूटर भाई***अहाँ तऽ जनैत छी हमर कोनो मांग नजि । हम दहेजक एकदम विरुद्ध छी ।

दिवाकर—जी हमर एहन कोनो अभिप्राय नहि, मात्र अपनेक आशीर्वाद चाही (जेबसें फोटो बहार कऽ दैत छथि) ई हमर बेटी रीताक फोटो अछि *** राखि लेल जाओ, रीता के देखबाक विचार हो तऽ ***

मास्टर—छी: छी: छी: कहैत गप करैत छी, ई देखा देखी, दहेज पर दहेजक मांग *** ई सभ तऽ समाज के गर्त में ढकेलने जा रहल अछि आ अपने सभ सन दिद्वान, उच्च घरक व्यक्ति सभ सेहो ***

दिवाकर—जी की कौन आय । बेटी बता छी । जतहि जाइत छी दहेजक मांग, कान्या देखेबाक प्रस्ताव, हम जे अड़िकऽ रही जे पाइ नहि गनब*** बेटी के नहि देखायब तऽ हमर बेटीक विवाह नजि हैत ।

मास्टर—हैं सेहो ठीके कहैत छी । पता नहि कोना एहि सभक अन्त होयत ।
(फूटनाक घासक छिट्टाक संग प्रवेश)

फूटना—की यी लीगिया निरच ई पण्डित जी, तखन पुछलहुं जे कतऽ सँ पाहुन आयल छथि तऽ बलु बजैत की भेल छल ?

घूटर—मास्टर एकरा मना कऽ दहक जे हमरा सँ नाञ्च भिड़य*** तोँ एकरा बहसा कऽ राखि देने छहक ।

मास्टर—फूटना ***खैर बाद में गऽर करब*** पहिने आगिन सँ जलपान आ चाहक

दिवाकर—मास्टर साहेब भाइ ई सभ छाँड़ि देल जाय***

मास्टर—आह से कोना हैत अपने पहिल बेर***

घूटर—अरे आब तऽ अबिते रहथुन । पहिने गप्प तऽ फाइनल करह***

मास्टर—दिवाकर बाबू हमरा किछु समय देल जाय । हमरा लोकनि बिचारिक कऽ अपने के सूचित करब ।

घूटर—सूचित करब ? दुर्गा-दुर्गा एतेक अगघैल जहाँ किएक गप्प करे छह हो ? जे फाइनल करबाक छह से अछने करह ।

दिवाकर—घूटर बाबू रहऽ दिपौत ***किछु समय तऽ आवश्यक छैक, बिचार बिमर्श

करबाक लेल । नरेन्द्रजी सँ पताचार करवामे किछु समय तऽ लगवे करतैन ।

घूटर—ओ की समय लगतैन ? हम नहि जनैत छी की ? हिनकर बात के नरेन्द्र कहियो टार नहि सकैत छनि ।

दिवाकर—आह से तऽ छोट भाईक घमें आ नीक कुल-शीलक यह तऽ परिचय*** तथापि मास्टर साहेब जहिया आशा करता हम पहुँचि जँब । (मास्टर सँ) मात्र एकटा अनुरोध से जे अपने वचन दी जे मानि लेब तऽ हम हिम्मत करी***

मास्टर—दिवाकर बाबू वचन होइते छैक पूरा करबाक लेल । हम कोनो तरहक वचन अछन नहि दऽ सकैत छी ।

दिवाकर—अपने हमरा गलत बूझि रहल छी । हम विवाहदानक विषयमे कोनो वचन नहि मांगि रहल छी । दरअसल अपनेक व्यक्तित्व, एहि झलकामे अपनेक शिक्षाक लेल समर्पण, छात्र लोकनि के अपन पाइ दऽ षऽ मदति करब, ई सभ हमरा चारु दिससँ पता लागि गेल अछि । हमहूँ किछु तेहने घरसँ आयल छी***एक साँझ घर मे भोजनक ठेकाने नहि । परम आदरणीय शिक्षक छलाह महेशबाबू*** आजीवन विवाह नहि कयलनि ।*** अपन कमाइक सभ धन निधन मेधावी छात्रक पाछाँ खर्च कऽ देलनि । हमहूँ जे छी से हुनके कृपा सँ । परन्च, जहिया हमर स्थिति नीक भेल महेश बाबू नहि रहलाह ।*** अपने के देखिकऽ हुनके स्मरण भऽ गेल ।*** एहि बैंग मे पचास हजार टाका तऽ कऽ निकलल रही जे कतहु आवश्यकता परल त गनि देब ।***हमर निवेदन यँ जे ई टाका अपने राखि लेल जाय ।

मास्टर—(तमसाइत):—दिवाकर बाबू ।... होश मे बात करह । अपने जनैत छी हम दहेजक एकदम विरुद्ध छी, अपने जा सकैत छी ।

दिवाकर—हमरा गलत नहि बूझी मास्टर साहेब । अहि टाका के विवाह-दान सँ कोनो मतलब नहि । हम तऽ मात्र ई चाहैत छी जे अहि टाका सँ अपने निधन छात्रक लेल कोष बनावो आ कतेको नरेन्द्र के पैदा करी***अपने विश्वास करह नरेन्द्रक संग हमर बेटीक विवाह हो अथवा नहि हो हमरा एको रत्ती दुःख नहि हैत (पैर पकड़ैत) कृपया हमर अनुरोध नहि ठुकरावो ।

मास्टर — ई की कऽ रहल छी...अपने ?

दिवाकर — मास्टर साहेब हम अपनेक पर ताधरि नहि छोड़ब जा धरि अपने अहि टाका के स्वीकार नहि करब । अपनेक रूप मे हमरा साक्षात महेश बाबूक दर्शन भऽ रहल अछि...हम हुनकर ऋण सँ उद्धार होमय चाहैत छी (कानऽ लगैत छथि)

घूटर — इनजीयर साहेब सगने ई की कऽ रहल छी ? विवाह दानक कोनो गप्पे नाहि आ पचास हजार टाका क्यों अहिना...

दिवाकर — अपने चुप्प रहल जाओ...अहि मे विवाह-दानक कोनो प्रश्न नञि...ई हमर प.प पुण्यक हिसाब अछि । जँ मास्टर साहेब हमरा एतेक कृतघ्न बुझैत...

मास्टर — नहि-नहि उठल जाओ...अपने सन व्यक्ति हृदय तोड़ब महापाप हैत...अहि टाका के अपनेक इच्छानुसार खर्च कैल जायत ।

दिवाकर — हम अपनेके कोना धन्यवाद दी से नहि जनैत छी । हे भगवान महेश बाबूक आत्मा आइ कतेक प्रसन्न होइत हेतैन्ह । बेश मास्टर साहेब, आप जाइत छी । आब आज्ञा देल जाओ ।

मास्टर — जो बेश ।

घूटर — दो देखिहक जल्दी सँ गरेमके... ..

दिवाकर — (तमसाइत) :— घूटर बाबू हम एक बेर कहलहुँ ने जे अहि सभसँ विवाह दानक कोनो संबंध नहि...मास्टर साहेब के दुःख हेतैन्ह आ' महेश बाबूक आत्मा तऽ कल्पि जेतैन, चलू... (बूनूक प्रस्थान)

(फूकनाक लोटा गिलास नेने प्रवेश)

फूकना — जाहिरेबा, ई सभ तऽ चलि गेला तऽ फेर ओ हलुआ ककरा लेल बने छैक...मीके भेल चलि गेला । मलिकिनी मलिकिनी ओ सभ तऽ चलि गेला ।

मास्टर — फूकना ई जे दिवाकर बाबू आयल छलाह

(स्त्रीक प्रवेश)

अहूँ आउ, देखू ई फोटो पसिन्न अछि ?

फूकना — मास्टर साहेब...एगो बात कहू ? बलू ई काज मे घूटर पण्डित परल छथि, हमरा तऽ मोन नहि मानैऽ है—

मास्टर — तो तऽ बेकार मे बदनामकरैत रहैत छहुँम ।

हुनका हमरा सँ कतेक प्रेम छनि । सभ दुःख सुख मे उपस्थित रहैत छथि ।

फूकना — अहाँ कहियो नञि बूझि सकब बलू । सोझ आदमी के टेंढ बात बुझेनाई मोश्किल । मुदा एगो बात सुनिलिय बलू शादी बियाह अपने जैसन आदमी के ओतऽ करक चाही... ।

ई कार बला, पेंट सूट बला आदमी आ संग मे ली'गिया भिरचाई, एक बेर खा लेब तऽ पानि पिबैत-पिबैत... ।

मास्टर — अच्छा अच्छा । जो तोरा के बुझाबय, जो अपन काजकर... ।

(फूकनाक प्रस्थान)

(स्त्री सँ) — कहू पसिन्न परल फोटो ?

स्त्री — फोटो मे तऽ बड़ सुन्दरि लगैत छथि, परं ई फूकनाक गप्प... एहेन-एहेन पैघ लोकके देखि कऽ डऽ लगैत अछि । ई बेवसा केहेन छै । हुनकर छुटिगेलनि की ?

मास्टर — हा...हा...हा छूटि नञि गेलैन । अहि मे पचास हजार टाका छैक । एकरा नीक जर्का राखि दियोक; काहि-भोर मे मधुबनी बैंक मे जमा कऽ देबै ।

स्त्री — पचास हजार टाका ? अहाँ...अहाँ पाइ लऽ कऽ बीआक विवाह...

मास्टर — ओपको... ई से पाइ नहि थीक । अहाँ के कि विश्वास होइत अछि जे हम पाइ लऽ कऽ भाईक विवाह करायब ? एकरा राखि दियोक, हम आवैत छी तऽ स्थिर भऽ कऽ बुझा देब ! मास्टरक प्रस्थान)

(प्रकाश बन्न होइत अछि)

दृश्य तैसर

(पोखरिक भीड़ । विवाकर बाबू आ घूटर बाबूक प्रवेश)

घूटर —अपनी तऽ हृदय कऽ देवी बाप रे बाप पचास हजार टाका अहिना दऽ देल
“ई मास्टर तेहेन सनकी अछि जे.....”

विवाकर —पंडितानी जाने नहि बुजारे ई तऽ बोर देलियैक अछि“आ अहि मे
मास्टर के फौतयऽ पढ़तैग । अपने स्थिर भऽ कऽ लगाना देखू । मात्र
अपनेक ई काज जे छीरे-छीरे सौते गाम मे प्रचार करा दिबोक जे
नरेन्द्रक विवाह एक लाख टाका मे हमरा भोसऽ निश्चित भऽ गेल छन्हि
प्रचार तेना कऽ होयबाक चाही जे अपनेक नाम नहि आबय । (जेबसे
टाका बहार करैत) ई दू हजार टाका आओर राखल जाय, विवाह
भेलाक बाद पाँच हजार टाका आओर अपनेक कमीशन माने कि अप-
नेक स्वागत सरकार मे....

घूटर —हैं...हैं...हैं । जागे निश्चित रहल जाओ । बाबू हमरा समेटा
बुझा रहल अछि ।

विवाकर —वेश तऽ आब आज्ञा दिय । परंच जे कहल से मोन राखब । बीच बीच
मे मास्टर साहेब सँ भेट कऽ-कऽ पत्र द्वारा सभ सूचित करैत रहब । वेश
नमस्कार ।

(विवाकर भागू बड़ि जाइत छथि । घूटर रुपैया गनऽ लगैत
छथि । प्रकाश बन्न होइत अछि)

दृश्य—चारिम

(मास्टरक घरक बलान । गेनालाल पटिया पर बैसिकऽ पढ़ि रहल अछि ।
चन्द्रकान्तक प्रवेश ।)

चन्द्रकान्त—मास्टर साहेब, मास्टर साहेब, विद्यार्थी, मास्टर साहेब घरमे छथि ?

गेना—आउ ने, बैसू ने । मास्टर साहेब कतौ गेल छथि अबिते हेता ।

(चन्द्रकान्त कुर्सी पर बैसि जाइत छथि)

चन्द्रकान्त—की नाम अछि विद्यार्थी ? केकर बालक छी ?

गेना—जी हमर नाम गेनालाल, हमर बाबूके नाम फूकन मरर ।

चन्द्रकान्त—ओह, फूकनाक बेटा ! ओह विश्वास नहि होइत अछि, हमरा चिन्हैत
छी ?

गेना—हूँ । अहाँ चन्द्रकान्त बाबू, पटना मे प्रोफेसर छियै ।

चन्द्रकान्त—वाह । अहाँ तऽ बड़ सुन्दर बजैत छी । अच्छा ई तऽ कहू जे पटना
की छै ?

गेना—पटना शहर छै आ बिहारक राजधानी छै ।

चन्द्रकान्त—वाह-वाह, अहाँ तऽ बड़ तेज छी ।

मास्टर (प्रवेशक संग)—के ? भाई ! कहिया एलौ ?

चन्द्रकान्त—आइये भाई, कहू की हाल चाल ?

मास्टर—सभ ठीक ठाक । कहू कतेक दिनक छुट्टी मे आयल छी ?

चन्द्रकान्त—आइ परमानेन्ट छुट्टी मे....

मास्टर—से की ?

चन्द्रकान्त—भाई रिजाइन कऽ देलौ । तंग आबि गेल छी, ई युनिवर्सिटीक बाता-
वरण सँ । एतेक दुषित, छी, छी, छी, मात्र पालिटिक्स, पढ़ाई
लिखाई सँ कोनो सरोकार नहि । भगवानक कृपा सँ बाप पित्ती बहुत
छोड़ि गेल छथि, आब गं मे रहब, अपन लिखा पढ़ी करब ।

मास्टर—ओह ।

चन्द्रकान्त—भाई, ई फूकनाक बेटा तऽ बड़ संस्कारी बुझाईत अछि ।

मास्टर—बड़ तेज, डिस्ट्रीक्ट स्कूलरशीप भेटलैक अछि । आब एकरा नेतरहाटक टेस्ट दियाकऽ ओतहि पठेबाक बिचार अछि ।

जेना—हम कतो नै जब, हम तऽ अहीं लग पढ़ब मास्टर साहेब ।

मास्टर—री एना जिद्द नहि करब क चाही, ओहि इसकूल मे तोहर जिनगी बनि जेतो ।

जेना—नहि नहि हम कतो नै जायब । हम अहीं लग पढ़ब, हम कतो नै जब ।

मास्टर—अच्छा-अच्छा ठीक छै जो अखैन आब कात्हि अबिहें...

(जेना बस्ता समेटिकऽ प्रस्थान करैत अछि)

चन्द्रकान्त—भाई पढ़बियो एकरा हम चलैत छी, आब तऽ भेंट होइते रहत ।

मास्टर—अरे बंसू भोजी सँ भेंट भेल की नहि ? हे यँ सुनैत छी, देखू के आयल छथि ।

(स्त्रीक प्रवेश)

चन्द्रकान्त—गौर लण छी भोजी ।

स्त्री—कोना छी ?

चन्द्रकान्त—कतुना जीवि रहल छी । अपन कहू ।

स्त्री—हमर की ?

चन्द्रकान्त—अहाँ के की ? अहींक तऽ दुनियाँ अछि । देखैत नै छी सेठानी जकी चतरल जा रहल छी ।

स्त्री—धुर...अहाँ के ठठ्ठा सुनैत अछि, आब तऽ बूढ़ भेलौं...आबो तऽ ।

चन्द्रकान्त—बूढ़ ? हा हा हा, हे यँ भोजी, भाइ छथि एहिठाम तऽ की कहू... कहियो असगर मे भेंट हो तखन ने बुझबै हम केहेन बूढ़ छी ।

मास्टर—हा हा हा, भाइ एकटा गप्प तऽ कहबै नहि केलौं । नरेन्द्रक विवाह स्थिर कऽ देलियैन । दिवाकर बाबू ओतय । अररिया में पी० डब्ल्यू० डी० मे एजक्यूटिव इन्जिनियर छथि । अहूँके बरियाती चलऽ पड़त ।

चन्द्रकान्त—बाह, उत्तम गप्प । परंच, भाइ बरियाती हम नहि जा सकब ।

मास्टर—री कियैक ?

चन्द्रकान्त—भाई अहाँ तऽ जनिते छी जे हम स्पष्टवादी छी । हम ई सिद्धान्त बनौने छी जे जाहि विवाह मे लेन-देन भेन हो हम ओहि मे सम्मिलित नहि हैब, या' अहाँ अहि विवाह मे टाका लेलियैक अछि ।

मास्टर—भाई के कहलक इ गप्प ?

चन्द्रकान्त—के कहत । सँसे गाम जनैत अछि जे अहाँ एक लाख टाका गनेलियैक अछि ।

स्त्री—आब बुझियो । हम तऽ पहिने कहैत रही जे ई आवस्यी ठीक नहि अछि ।

मास्टर—अहाँ चुप रहू । एहेन सम्य आदमीक विषय मे अनुचित गप नहि बाजी ।... भाई हम सस्ते कहैत छी, एकटा पाइ नरेनक विवाहक लेल नहि लेने छी । ओ तऽ रिवाकर बाबू पचास हजार टाका जबदस्ती....

चन्द्रकान्त—जबदस्ती की ? इहो सभ जबदस्ती होइत छैक ? खैर, अहाँक गप्प अछि, अहाँ जानी । आब हम चलैत छी, कात्हि भेंट हैत । (प्रस्थान)

(मास्टर साथ पर हाथ छऽ कऽ बैसि रहैत छथि)

स्त्री—ई सभ घूटर भाईक काज छी । सँसे गाम मे हल्ला करवा देलैन... अहाँ हुनकर टाका आपस कऽ दियोन ।

मास्टर—नै...नै...ओ एतेक नीक काजक लेल, कतेक नेहोरा कऽ कऽ ई टाका देलैन अछि, हम कोन आपस कऽ सकैत छी । ई घूटर भाई केर सेहो कोनो दोष नहि । हम तऽ अपने कँक गोटा के कहलियैक जे पचास हजार टाका दिवाकर बाबू, गरीब छात्रक हेतु दऽ गेल छथि, आब लोक दोसरे माने लगा लिए तऽ हम की कऽ सकैत छी । खैर, हमरा सभहक अत्मा पबित अछि लोक के जे मोन होइ से बाजऽ दियोक ।

स्त्री—हमरा तऽ डर लगैत अछि । कहीं बीआ सेहो इ सूनिऽ तमसा ने जाथि । हे हम तऽ फेर कहब जे कोनो गरीब घरक सुशील कनियाँ...

मास्टर—(तमसाइत) :—अहाँ बेर-बेर एके रट किएक लगौने छी ? अरे स्टेटस कोनो चीज होइत छैक । सज्जन व्यक्ति के हम बचन दऽ देने छियैन... विवाहक दिन निश्चित भऽ गेल, आब अहाँ इ तेसरे राग अलापि रहल छी ।... आब अहि विषय मे कोनो गप नहि हेबाक चाही ।

स्त्री—जहाँ बिछ बाजू कि नमसा जाइत छी, पढ़न-लिखल नहि छी तऽ किन... जे मोन हुण से कर...

(बर्जत प्रस्थान प्रकाश बग्न होइत अछि)

दृश्य पाचम

(एकटा कुर्सी पर सास्टर साहेब बैसल छथि आ नरेन्द्र बगलमे ठाढ़ छथि । फूकना घर सँ अटकी बेडिंग आवि समान सभ आनि आनिकऽ राखि रहल अछि । मास्टर साहेब रहि-रहि कऽ घरमा निकालि आखि पोछि रहल छथि । दरबजाक पाछु नरेन्द्रक नव त्रिवाहिता आ मास्टर साहेबक स्त्री ठाढ़ छथि)

फूकना—(ऊँच स्वर मे) :—सभटा समान बहार भऽ गेल, मिलाकऽ देखि लिय बलू । कयू छूटि जैत तऽ फेर कहव जे बलू फूकने चोराकऽ अपन घर लऽ गेल ।

नरेन्द्र—(जेब सँ एकटा पुर्जी बहार कऽ समान मिलबैत) हँ सभटा समान तऽ आबि गेली खाली एकटा शृंगारदानी रहि गेली जो नेने ओ.....

(फूकनाक प्रस्थान)

मास्टर—नरेन्द्र

नरेन्द्र—जी ।

मास्टर—अहाँक विवाह भेना अखन मात्र बारह दिन भेल अछि आ द्विरागमनक मात्र पाँच दिन । काहि भरफोड़ी छल आ आइ जा रहल छी, कोमा-दन लगैत अछि... विवाह आ द्विरागमनक गहमा गहमी सँ आइए सभ निवृत्त भेल अछि । बीबासिन हाथक बनाओल भोजनी नहि केलहुँ किछु दिन रहि जैतौ तऽ.....

नरेन्द्र—भाई...छूटी...एतेक पैघ रिस्पाँसबलीटी.....

मास्टर—हँ से त ठीके जतेक छूटी लऽ कऽ आयल छी ताहि सँ वेशी नहि बढ़बाक चाही । अनुशासन एकरे कहैत छैक । परन्ध, कनिया के जे छोड़ि दितियेनि.....

(पर्दाक दोसर दिस)

स्त्री—कनिया भाई तऽ ठीके कहैत छथि...अखन तऽ ठीक सँ हम सभ अहाँ के देखबो नहि केलहुँ अछि ।

रीता—नहि-नहि नहि बुझथिन, जे हमरा बिना नरेन्द्र के बतेक दिक्कत भऽ जेतैन, नहि रहबाक ठेकान ने खेबाक ठेकान ।

फूकना—(हाथ मे पिकदानी मेने प्रवेश) बलू एगो बात पूछू छोटकी मालिकिनी... जे बलू आइ सऽ बारह दिन पहिने नरेन बीबा के तऽ बलू कोनो दिक्कते नै होइ छलैन बलू इ बारह दिन मे ई कतऽ सऽ दिक्कते-दिक्कत....

मास्टर—फूकना... वेशी बकर-बकर नीक नै अपन काज कर.....

फूकना—ठीके तऽ हमरा बकर-बकर करबाक कोन काज हे लिय नरेन बीबा अपन पिकदानी भलू ।

नरेन्द्र—पिकदानी ! फूकना तोरा ई पिकदानी आन' के कहलकी ?

फूकना—अहीं तऽ बलू कहलौं जे एगो दएह बैचि गेल अछि.....

नरेन्द्र—ओफह हम कहलियौ शृंगारदानी शृंगार बक्सा आ तौ.....

रीता—ओ तऽ हम मेने छी (पर्दाक पाछुसँ बजैत छथि । मास्टर साहेब अथाक भऽ जाइत छथि : फेर अपना के संयत करैत....)

मास्टर—फूकना देख तऽ इ रमुआ रिक्सा लऽ कऽ नञि एली अखन घरि । टूँक टाइम भेल जा रहल छै ।

घूटर—(प्रवेशक संग)....अर्धयं जुनि होअह हो मास्टर । रमुआ आ' सोखिया टूँक रिक्सा आबि रहल छ । दोकान लऽग रिक्सा ठाढ़ कऽ कऽ पाइ पिबैत छल । पुछलियं तऽ कहलक जे नरेन बीबा सकरी जेथिन टिरेन पकड़ऽ लेल । हो नरेन्द्र हुँ टा रिक्सा किएक मंगीने छह । बीह मारते समान देखैत छियह ।

नरेन्द्र—भाई असल मे....

घूटर—ओ हो हो बुझलिय, बुझलिय सपरिवार जा रहल छह किने ?

नरेन्द्र—जी ।

घूटर—जेबेक चाही...जेबेक चाही...आब मास्टर के कथीक कमी...तोरा पढ़ा लिखाकऽ बड़का हाकिम बनाइये देलखुन आ' तोहर विवाह मे पचास हजार टाका भेटलैन ताहि सँ बाँकी जिनगी.....

मास्टर—घूटर भाई....

२०

घूटर—तमसाइत किएक छह ? हमरा सँ कोनो गलत गप बजा गेल भी?

फूकना—अहाँ सँ बलू गलत गप किएक बजाएत... हरिश्चन्द्रक बाद तऽ अहि नै जनम लेली यी लौंगिया मिरचाइ पण्डित,

घूटर—देव रे फूकना, तोहर दिमाग बहुत बड़ि गेल छी, तोरा इ मास्टर माथ पर रखने रहैत छीक तऽ जुनि बूझ जे... री, तोरा सन-सन के हिम्मत नहि होइत छलै जे हमर बाप दादाक डयोड़ी पर पैर धरैत।

मास्टर—फूकना

फूकना—जी मास्टर साहेब।

मास्टर—जो अपन काज कर। सुन... आंगन सँ पासबुक आ चेकबुक मंगने ओ... हमर इसकूल बला छोड़ा मे हैत।

(फूकनाक प्रस्थान संग मे मास्टरक स्त्रीक प्रस्थान)

घूटर—ई नीक केने छह जे पाइ पासबुक मे रखने छह। आइ कालिक जमाना तऽ... अँय ही मास्टर तोरा इनजीयर साहेब सँ पचास हजार दिया देखियह परंज, तौ तऽ एकटा लवाम विवाह मे खर्च नञि केलहक, गनटा डकारि लेलहक... बाह रे इनजीयर साहेब कधी मिल एक पाइ तकैर चिन्ता... आ केहेन बड़िया इन्तजाम बाह... घर नञि भेटलैन ताहि सँ की बर तऽ फस्ट क्लास प्राप्त भेलनि।

(फूकना पासबुक आनिकऽ बँत अछि)

मास्टर—(चेकर हस्ताक्षर करैत) नरेन्द्र राखू इ पासबुक। अहि मे सभटा पाइ जमा करा देने छी-मधुबनी स्टेट बैंक मे। ट्रान्सफर करालेब (पासबुक नरेन्द्रक हाथ मे बँत छथि। नरेन्द्र पासबुक छनटा-पुनटा कऽ देखलै छथि)

नरेन्द्र—पचास हजार! भाई पूरा पचास हजार! भाई विवाह मे जे खर्च भेल?

फूकना—से हमरा स' ने पूलू बलू मास्टर साहेब अपन बलू किबन तऽ कहै छै जे परडीडेन्ट फंड सँ बहार कऽ कऽ बलू अहाँक विवाह मे खर्च केलनि।

नरेन्द्र—अँय, भाई ई अहाँ की केने छी प्रभिडेन्ट फंड सँ...

मास्टर—नरेन अहाँ हमर भाइये नहि बेटा सेहो छी। अहाँ नै तऽ माय के देखलौ आ ने बाबू के...

(रिक्सा आबि गेल अछि फूकना समान सभ उठा कऽ लऽ जा रहल अछि)

नरेन्द्र—भाई इ पासबुक अहाँक थीक अहाँ राखू। इ हम नञि लऽ सकैत छी।

मास्टर—नरेन जिबूद नञि करी...

नरेन्द्र—नञि भाई नञि ई हम नञि लऽ जा सकैत छी।

घूटर—केहेन असम्य छह। मास्टर तोरा पढ़ा-लिखाकऽ एतेक पैघ आफीसर अही लेल बनेलखुन जे हिमकर आशा के उलंघन करऽ, मास्टर कहै छथुन्ह तऽ पासबुक राखि लह।

नरेन्द्र—(भोजी खज जाईत छथि) भोजी... भोजी अहीं भैया के बुझबियौन... ई पासबुक राखि लिय भोजी...

स्त्री—बोआ राखि लिय आ' हमरा सभ के अहिठाम पाइक काज कोन हैत।

नरेन्द्र—नञि भोजी नञि ई हम नञि कऽ सकैत छी। ई पासबुक अहाँ लऽ लिय भोजी। एतेक छोट जुनि वनाउ हमरा।

रीता—(नरेन्द्रक हाथ सँ पासबुक छिन्नत) बहिन तऽ ठीके कहैत छथि। एतऽ पाइक कोन काज हेत। ओतऽ नव घर बसेवाक अछि। पचीस तरहक खर्च हैत... तऽ कतऽ सँ आनब? आब की बुझैत छिये जे हमर पापा फेर देबऽ ओता?

नरेन्द्र—रीता.....

रीता—चिचिया किएक रहल छी...?

मास्टर—नरेन समय भऽ गेल, अहाँ सभ रिक्सापर बैसू।

(नरेन्द्र आ रीता दड़ैत छथि, प्रकाश बन्न होइत अछि।)

छठम् दृश्य

(मास्टर माथ पर हाथ घऽ कऽ बँसल छथि । स्त्रीक आङ्गन सँ प्रवेश)

स्त्री —आब उठू ने । स्नान कऽ कऽ पूजा पाठ कऽ लिय ने । कतेक अवेर भेल जा रहल अछि ।

मास्टर —हूँ... बारह बाजि गेल अछि ।... आइ मोन कोनादन लागि रहल अछि । १४-१५ दिन सँ कतेक रमन-चमन छल । आइ घर एकदम उदास लागि रहल अछि । नरे अखन सोझां मे रहैत छथि तऽ कतेक मोन प्रफुल्लित रहैत अछि... हे यै हमर झोड़ा मे एकटा पोस्ट कार्ड हैत... नेने तऽ आइ, नरे के चिट्ठी लिख दैत छियैन...

स्त्री —चिट्ठी लिखबैह...? अहाँके की भऽ गेल अछि आइ ? बौआ तऽ अखन आघे रस्ता मे हेता, समस्तीपुर सेहो नहि पहुँचल हेता आ । अहाँ चिट्ठी लिखबैन ?

मास्टर —उके कहैत छी । भोरे मे तऽ गेलाह अछि । लगैत अछि जे कतेक दिन भऽ गेलैन हुनका गेना... यै अहाँके उदास-उदास नहि लागि रहल अछि ?... किछु कहलौं... नहि... अरे अहाँ तऽ कानि रहल छी ?... पता नहि आइ हमर दिमाग के की भऽ गेल अछि... अन्ट-सन्ट बजने चलल जा रहल छी... अरे अहाँ के उदास नहि लागत तऽ बेकरा लगत... अहाँ तऽ गायो सँ बढि छियैन नरे के... जःम नञि देलियैन... परंच

(गेनालालक बस्ता टंगने प्रवेश)

गेना —मास्टर साहेब प्रणाम ।

मास्टर —के गेना... आ बैस... पटिया बिछा ले...

स्त्री —गेना... आइ जो... काल्हि सँ पढ़ऽ अबिहें... अइ दिनका अरःम करऽ दहुन ।

मास्टर —नहि-नहि... पढ़ऽ बियो एकरा... ताघरि हम स्नान कऽ लैत छी... गेना पटिया बिछा ले... ..

(गेना पटिया बिछा कऽ बँसैत अछि आ पढ़ैत अछि)

गेना —ई सदास नहि बुझाईत अछि... (मास्टर साहेब एकटक आकाश बिस देखि रहल छथि)

गेना —(पुनः) मास्टर साहेब... मास्टर साहेब ई सवाल नहि बुझाईत अछि...

मास्टर —हूँ... ला... देखियो तऽ...

गेना —मास्टर साहेब... आइ अहाँ के मोन साराब अछि की ? अहाँ एतहि पढ़ि रहूँ... हम पैर जाँति दैत छी...

मास्टर —नहि-नहि कोनो खास बात नहि तो अपन पढ़ाई कर...

गेना —नहि मास्टर साहेब... हम अहाँक पैर जँतबे करब

(जबर्दस्ती कुर्सीपर सँ उठैनाक प्रयास करैत अछि)

मास्टर —हा... हा... हा बड़ बड़्दी भ' गेल छै रे गेना... हा... हा... हा यै... सुनैत छी इ गेना ओहिना जिद्द करैत अछि जेना नरे बच्चा मे करैत छ तऽ... माई आइ हम अहाँक पैर जँतबे करब... हा... हा... हा...

गेना —(पैर जँतैत) मास्टर साहेब । छोटका मालिक अहाँ सँ झगड़ा कऽ कऽ किएक चलि गेलाह ?

मास्टर —झगड़ा... नहि तऽ । के कहलकी तोरा ?

गेना —बाबू कहैत रहे जे छोटका मालिक अपन कनिगाँक डरे झगड़ा कऽ कऽ चलि गेलाह ।... मास्टर साहेब लोक बियाह किएक करैत छै ?

मास्टर —गेना भगवानक एहि सृष्टि के चलेबाक लेल लोक के बियाह करऽ पड़ैत छैक । परंच कहियो काल इ बियाह बड़ दुःखदायी होइत छै—अपनी लेल आ समाजक लेल...

(स्त्रीक कड़ू तेलक बाटी आ गमछा नेने प्रवेश)

गेना —मास्टर साहेब हम बियाह नहि करब आ कहियो अहाँके छोड़ि कऽ नञि जैब ।

स्त्री —हूँ री... दोड़ले बियाह करबे-फेर के पुछैत अछि एहि बुढ़वा मास्टर के ?

मास्टर —अरे जाय बियो... अखन बच्चा छै... अखन की बुझऽ गेल...

गेना —मास्टर साहेब... हम सब बुझैत छियै... बियाहक बाद लोकके घरबाली सँ डर होइत छै... घरबाली जेह कहैत छै सँह करऽ पड़ैत छै ।

- स्त्री — बाप री बाप "री केकरा देखलहीए घरवाली सँ डरैत ? तोरा मास्टर साहेब के हमरा सऽ डऽर होइत छनि की ?
- गेना — मलिकिनी " अहाँ दूनू गोटे तऽ देवता छी । आन सभके तऽ सँह हाल छं " हमरा बाबू के सेहो माय सँ बड़ डऽर होइत छै " छोटकी मलिक तऽ छोटकी मलिकिनी के डऽरे—
- स्त्री — गेना " खबरदार जे बीआक विषय मे एहन गप्प बजलै । के कहलकी तोरा ई सभ " ?
- गेना — बाबू कहैत रहै—
- स्त्री — इ फूकना अपना के की बुझैत अछि ? अनाप सनाप " (फूकनाक प्रवेश)
फूकना बीआक विषय मे तो सभ की बजैत घुरैत छै ?
- फूकना — ठीके तऽ बजै छी बलु " अहाँ दूनू गोटे तमसायब तऽ तमसाउ " "मुदा छोटका मलिक आ छोटकी मलिकिनी जे केलेन बलु से हमरा एको पाइ नीक नजि लागल "
- स्त्री — तोरा नीक लगला नइ लगला सँ कोन फर्क " बेशी " काबिलतीक दाबा छी तऽ ओ अपन घरक रस्ता पकड़ " हमरा कोनो जरूरत नहि अछि तोहर "
- फूकना — न मलिकिनी " एना नजि निकालू बलु ।
- मास्टर — जाय बियो " ई अनपढ़ अछि " हरेक बात के अपना हिसाबे लैत छै " फूकना जो अपन काज कर " गेना जो कारिह सँ बहिहँ "
- गेना — (सकुचाइत) मास्टर स हेब अहाँक मोन खराब अछि " अहाँ कती नजि जात । घरे मे आराम करू "
- मास्टर — गेना एमहर सुन (अपना लग बजा ओकर माथ पर हाथ राखि दैत छथि)
" नहि जायब " कती नहि जायब " घरे मे रहब " आव तो " " जो " "
- (गेना अपन बस्ता उठा कऽ जाइत अछि)
- (प्रकाश बन)
- (एतऽ 'मध्याह्न' देल जा सकैत अछि)

२५

दूर्य सातम

(नरेन्द्रक शहरक डेराक डाइंग रूम । साधारण । एकटा सोफा सेह । हममे एकटा टूल पर टेलिफोन । नरेन्द्र आफिज जेबाक लेल तैयार छथि ।)

नरेन्द्र—रीता " " " " " रीता " " " " "

रीता—(प्रवेशक संग) अरे एतेक बिचिया किएक रहल छी " " " ?

नरेन्द्र—रीता हमर जेब मे पाँच सय टाका छल ?

रीता—हँ " " ओ तऽ हम पछिला भास जे साड़ी उधार लेने रही तेकरे देमाक लेल निकालि लेली ।

नरेन्द्र—ओह " " ओ तऽ हम भैया के पठेबाक लेल रखने रही आ । " " " " "

रीता—घरक तऽ खर्च नीक जकाँ चलिते नहि अछि आ अहाँ के भैया भीजी सुझैत छथि—हुँ " " " " " अहाँक पोस्ट पर जे सभ छथि हुनकर सभक रहन-सहन देखैत छथिनि । बगले मे तऽ श्रीवास्तव साहेब छथि " " " " "

नरेन्द्र—ओफ ओ रीता " " " " " अहाँ बुझैत किएक नहि छी जे अनकर देखा-देखी करबा मे लौक के गर्त मे डूबऽ पड़ैत छैक ।

रीता—के कहैत अछि गर्त मे डूबऽ ? नहि डूबू " " तखन भैया भीजीक चिन्ता नहि करू " " " " "

नरेन्द्र—केना नहि करू—ओ हमर भाई-भीजीयेटा नहि छथि । ओ तऽ हमर मायो-बाप सँ बढ़ि क' छथि " " " " " भाइ आठ मास भऽ गेल हमरा सभ के गाम सँ एना " " " " " हरेक मास दरमाहा सँ पाइ पठबऽ चाहली परन्तु, " " " " " जे अपन पेट काटि कऽ हमरा पढ़ीलक प्रामिटेन्ट फाटक पाई सँ हमर विवाह मे खर्च केलक तकरा हमर दरमाहाक मधुरो नसीब नै " " " " "

रीता—हँ । नसीब नै " " " " " दरमाहाक सभ पाईक मधुर कीन लिय आ' जाउ अपन भाई भीजी के खुआ दियोन " " " " " सँह रह्य तऽ हमरा कियेक बनलहुँ ।

नरेन्द्र—ओह रीता—तमसाउ जुनि " " " " " कने स्थिर मोन सँ सोचू कि हमरा सबहक ई कर्तव्य नहि जे हुनका लोकनि के खुश रखबाक प्रयास करी, हुनका लोकनि लेल चिन्तित रही—

रीता — चिन्ता खाली हमहीं सब करी। हुनका लोकनि के हमरा सभक कोनो चिन्ते नहि। आइ धरि एकटा पोस्टकार्डों नहि लिख भेलैन जे हमरा लोकनि कोना छी ?

नरेन्द्र — हमहें दस एकोटा पत्र लाजे नहि लिखलियैन अछि। सभ बेर सोचैत छी जे पाइ पठेबनि तऽ संगे चिट्ठी लिखबनि परञ्च... खैर हम चलैत छी... आफिसक समय भऽ गेल... (प्रस्थान)

(प्रकाश बग्न होइत अछि)

(पुनः मंच पर प्रकाश। रीता एकटा पत्रिका पढ़ि रहल छथि। पाठवं सँ दरबाजा टुकड़ेबाक एवं पोस्टमैनक स्वर। रीता बड़ि कऽ दरबजा फोलेत छथि आ पोस्टमैन सँ चिट्ठी लऽ लेत छथि।)

रीता — ओफ फेर चिट्ठी... पता नहि ई चिट्ठी एनाइ कहिया बन्द हैत (फो-कऽ पढ़ैत छथि।) पाठवं सँ मास्टरक स्त्रोक स्वर मे चिट्ठी पढ़ल जाइत अछि।)

प्रिय बीआ,

शुभाशीष।

अहाँक भैया कतेको पत्र दऽ चुकल छथि परञ्च एकोटाक जबाब नहि। आइ दू मास सँ बिछोओन पकड़ने छथि अहाँक भैया। स्कूल सँ छुट्टी नेने कतेक दिन चलत ? पोद्दार डाक्टर कहैत छथिन जे टी० बी० भऽ गेल छनि। हमरा तऽ किछु नहि फुराइत अछि। घरक खर्च, दवाईक खर्च चलब आब बहुत मोशकिल भऽ गेल अछि। बीआ अहाँ एना किएक तमसाएल छी हमरा सब सँ कोनो गलती भऽ गेल हो तऽ क्षमा करब। परञ्च कम सँ कम एक बेर अपन भाई के देख जाउ। ओ तऽ मात्र अहाँक नाम लेत रहैत छथि।

अहींक,

भीजी

रीता — हूँ... अहींक भीजी (चिट्ठी फाड़ि कऽ टुकड़ा-टुकड़ा कऽ दैत छथि)
रहिययाँ... रहिययाँ

रहिययाँ — (प्रवेशक संग) जी मेम साहेब।

रीता — (फाड़ल चिट्ठी दैत) एकरा बाहर मे फेंक दही—
(रहिययाँ लऽ कऽ चलि जाइत अछि, प्रकाश बग्न)

दृश्य आठम

(भोरका समय। नरेन्द्र सोफा पर बँसल एकटक उपर देखि रहल छथि। रहिययाँ बाहूँ राखि जाइत अछि। कनेकाल बाद)

रीता — (प्रवेश) अरे... सामने चाह राखल अछि अहाँ एकटक छत के निहऱि रहल छी ?

नरेन्द्र — अँय रीता... भरि राति निन्न नहि भेल... तेहेन-तेहेन सपना देखलहुँ अछि भैया-भौजीक विषय मे

रीता — बस फेर शुरु भऽ गेलीं—भोर होइते भैया-भौजी

नरेन्द्र — रीता... रीता कनेकाल हमरा असगरे छोड़ि दिय।

रीता — बाहूँ असगरे छोड़ि दियऽ तऽ हम की देबाल सँ गप्प करी। भोरे-भोर लोक नीक-नीक गप्प करैत अछि आ अहाँ के तऽ बस असगरे छोड़ि दिय... सुनु आइ रवि अछि... चलू कतौ घूमऽ चलैत छी...

नरेन्द्र — आई ? नहि... फेर कोनो दोसर दिन...

रीता — हूँ। अच्छा आई बजार चलू फ्रीज किनबाक अछि...

नरेन्द्र — फ्रीज ? फ्रीज कीनब से पाई कतऽ अछि ?

रीता — पाई ! पाई Installment मे देबै—कोन एहन शोकानदार अछि जेकरा अहाँ कहि देबै आ ओ Installment पर नहि देत... आखिर अहाँ Income Tax Officer छी...

नरेन्द्र — रीता अहाँ हमर स्वभाव जनैत छी तखन फेर एहन गप्प करैत छी...

रीता — राखू अपन स्वभाव अपने लऽग। हमरो लोक चिन्हैत अछि हम अपने जा कऽ आई फ्रीज अनबे करब...

नरेन्द्र — रीता सबरदार जे एहन काज केली तऽ ठीक नहि हैत

रीता — किएक ठीक नहि हैत... अहाँ जे करी से सभ ठीक आ हम गलत। हमर पापा देबऽ चाहैत छथि से न लेब। अपनो न कीनब... हूँ हमर पापा बला पचास हजार टाका बैंक मे रखने छी दुनू भाई मिल कऽ आ हमर घर...

नरेन्द्र—रीता हमर भाई पर कलंक जुनि लगाउ ओ तऽ पासबुक दऽ देने छथि—परन्च ओ हुनकर पाई छनि । ओ एकटा नीक काजक लेल अहाँक पापाक अनुरोध स्वीकार कऽ ओ पाई लेलनि । हम ओहि मे सँ नहि छू सकैत छी— अहाँ के फीज ने चाही ठीक छै पन्द्रह दिनक भीतर फीज आबि जैत

रीता—सत्ते—सत्ते कहैत छी ?

नरेन्द्र—हाँ—आबि जैत—

(पासबु सँ घूटरक स्वर—नरेन्द्र ही नरेन्द्र)

नरेन्द्र—अरे ई तऽ घूटर भाई दुसऽ इत छथि (दरबजा फोलि) अरे घूटर भाई अहाँ—आउ-आउ—रीता अहाँ भीतर जाउ घूटर भाई आबि रहल छथि

रीता—के घूटर भाई ? ओहो बँह ने जे हमर विवाह मे पापा के मदत केने छलथिन—आ जे पचास हजार टाका बला पासबुक दिया बेने रहथि

नरेन्द्र—(तमसाइत) रीता—

(घूटर प्रवेशक संग)

घूटर—दुर्गा—दुर्गा—हो एना बयो घरवाली पर तमसाय—घरवाली पर तामसक अर्थ अपना आप पर तामस—हो घरवाली होइत छै, लड्डीगिनी—ताहि हिसाबे तामस तऽ अपने आधा अंग पर—कह' कोना छह ?

नरेन्द्र—नीके छी । घूटर भाई, भैया आ भोजी कोना छथि ?

घूटर—हो हम तऽ मास भरि सँ बाहर छी—तनू कतऽ चाईबासा गेल रही—आब' तऽ नहि दैत छलाह । आ तेहने आवेसी हमर पुतोहु—आब आपस होइत रही तऽ सोचलहुँ दू चारि दिन सोरो अन्न खेने बली—बोआसीन एक गिलास जल चाही ।

रीता—जी तुरत—(प्रस्थान)

घूटर—हो नरेन्द्र एतेक पढ़ि लिख गेलह । एतेक पैघ पोस्ट पर छह तथापि ई दकियानूसी विचार । हो हम तऽ पहिल बेर जखन चाईबासा गेल रही तऽ नूनूक घरवाली के कहि देलियन जे हे बोआमीन ई गाम नहि

छैक, शहर छैक—अहिठाम पर्दा करबाक कोनो औचित्य नहि आब देखह वेटा पुतोहु पोता, पोती सब संगे बैसि कऽ खाईत छी—

नरेन्द्र—परन्च भाई, ई उचित नहि—

रीता—(अलक संग प्रवेश)—की उचित नहि ? घूटर भाई दस दिन एतऽ रहताह—अहाँ बलि जैब आफिस—हम ओहि घर मे आ घूटर भाई एहि घर मे माथ पर हाथ घऽ कऽ की बैसल रहब ?

नरेन्द्र—ओफ—(उठैत) अहाँ के के बुझाबय । घूटर भाई, हम कने अबैत छी । (घर चल जाइत छथि)

घूटर—बड़ तमसाह भऽ गेलाह अछि नरेन्द्र—बोआसीन प्रसन्न छी किने ।

रीता—की प्रसन्न रहब । हिनका तऽ भोर सँ साँझ धरि भैया-भोजी भैया-भोजी जपवा सँ फुसैत नै—

घूटर—ओह ! तऽ इ मास्टर अखन धरि—सँह तऽ कहैत रही जे एतेक पैघ अफसर आ घर मे किछु नहि । इज्जीयर साहेब तऽ कहैत छलाह नरेन्द्र दू-तीन साल मे कैकटा इज्जीयर के कोन सकैत छथि ।

रीता—हँ—पापा कत' हमरा धकेल देलैन !—दरमाहा सँ संतोष करऽ पड़ैत अछि—चाहथि तऽ की नहि कऽ सकैत छथि । लाख-दू लाख तऽ मास दू मास मे—मुदा ई तऽ हरिश्चन्द्रक—

घूटर—भाई छथि—सँह ने ।—मुदा मास्टरो के तऽ हालत बड़ खराब छै । आई दू मास हँ टो० बी० तऽ कऽ घर मे पड़ल अछि—पोहार डाक्टर कहैत छल जे आरो कोनो—कोनो बिमारी छै—नरेन्द्र के नहि कहलियन जे—

रीता—नीके कैल ।—आ हे हिनका किछु कहबो जुनि करियोन नहि त'

घूटर—मुदा मास्टर तऽ कैकटा चिट्ठी लिखलकै अछि । नरेन्द्र के—पता तऽ हेबे करैत—भऽ सकैत अछि अहाँ के नहि कहने होथि—

रीता—(लग्न आबि)—घूटर भाई हिनका किछु बुझल नहि छनि, सभटा चिट्ठी घरक पता सँ अबैत छै । आ' हिनका हम एकोटा नै देलियनि अछि—

घूटर—बाहू...बाहू... खूब नीक काज केमे छी... आव बुसाक्ष अछि अहाँ
इनजीयर साहेबक असली बेटी छी... हमर सार अहाँक बिषय मे
लिखने छलाह जे खूब पढ़ल-लिखल, गृह कार्य मे दक्ष चतुर... से सभ
उचिते... परन्च, बीआसीन... हम घूटर। कने हमरो पर खेयाल
राखब... असल मे घूटर के पेटे बलाय। घूटर के जे नीक-नीक व्यंजन
सँ पेट नहि भरैत छनि तऽ पेट मे बात पचबे नहि करैत छनि...

नरेन्द्र—(प्रवेशक संग) की नहि पचैत अछि घूटर भाई ?

घूटर—हो बीआसीन माउस मंगेबाक गप करैत छलीह तऽ सँह कहलियनि जे
वाहरक माउस तऽ हमरा पचिते नहि अछि। नीक हेतह जे माछे तऽ
अबह... आह... अहि सभ ठाम मोशकिल सँ तकला पर जमीरी नेबो
भेटैत छैक, से अवश्ये नेने अबिअह... ता हम कने डोल-डाल सँ निवृत्त
होइत छी... केमहर अछि बाथ रूम बीआसीन ?

रीता—हँ... हँ अबियौ ने एमहर ओहि दिस...

(घूटरक प्रस्थान)

नरेन्द्र—आइ रवि कऽ ई माछ माउसक गप किएक उठेलहुँ... अखन तऽ
रहबे करताह दोसर दिन अनितहुँ...

रीता—ओ बेघारे एतेक दूर सँ एलाह अछि... हमर की अहाँ के ने भाई छथि।

नरेन्द्र—भाई... ओह... हँ भाई छथि... लाउ झोड़ा...

रीता—अपने किएक जैब... चपरासी...

नरेन्द्र—ओ हमर बापक नोकर नहि अछि... जहिना हम सरकारी नोकर
तहिना ओहो... लाउ झोड़ा...

(रीता झोड़ा आनिक' दैत छथिन नरेन्द्रक प्रस्थान)

नवम दृश्य

घूटर स्नान क' क' खूब जोर-जोर सँ दुर्गाक पाठ करैत आबिक'
सोफा पर बँसैत छथि। दुर्गा पाठ चलि रहल छनि— बीच-बीच मे माछक
सुगंध लेबाक अभिनय करैत छथि)

रीता—घूटर भाई... भोजन परोसी ने ?

घूटर—हँ-हँ अहि मे किएक बिलम्ब ? नरेन्द्र स्नान केलैन ?

रीता—हँ ओहो तैयार भऽ गेल छथि।

घूटर—बीआसीन अहाँक घर मे ओ की कहैत छैक डानी टेबुल नहि देखैत
छी ? हमर नूनू तऽ किरानिये छथि परन्च ओहो डानी टेबुल रखने
छथि... डानी टेबुल पर खेबाक भजे किछु आओर होइत छैक। सभटा
चीज बस्तु सामने राखल रहल जेकरा... जे... जतेक खेबाक हो
खाय...

रीता—हमरा ओतऽ की देखब... किछु नहि हमर पापा की नहि खरीद कऽ
रखने छथि हमरा खेल... फीज, टी० भी०, पलंग, ड्रेसिंग टेबुल कार
तक खरीद कऽ दै लेल तैयार छथि। परन्च, ई तऽ तेना कऽ ने हमर
पापा के बाजि उठैत छथिन जे... की कहू घूटर भाई... आव बहुत दिन
तक हम नहि रहि सकैत छी इनका संग...

घूटर—दुर्गा-दुर्गा... अहुना बयो सोचय... बीआसीन भगला सँ काज चलत ?
खैर... आव हम आबि गेल छी... सब ठीक भऽ जैत... होउ... भोजन
परोसु...

(रीता क प्रस्थान... नरेन्द्रक प्रवेश)

घूटर—आबह... आबह... हो मुँह किएक लटकल छह ?

नरेन्द्र—नहि तऽ, कहाँ ?

घूटर—तो कहबह से हम मानि जेना लेब। हो मैथिलक घर मे जहिया-जहिया
माछ बनेत छैक तहिया-तहिया तऽ ओकरा चेहरा पर सौंसे संसारक खुशी
रहैत छै... तोरा जकाँ अकाश काँकोर बनल नै रहैत अछि... वँह देखहु
आबि रहल छहु...

(रीता टेबुल पर भात माछ क थरी-बाटी रखैत छथि। संग मे नोकरानी रश्मियाँ गिलास मे जल अनेत अछि।)

घूटर—शुरू करहूँ... (किछु मंत्र बूदबुदा कऽ भोजन आरम्भ करैत छथि)
 ...बाह-बाह रह ताहु पर जमीरी नेबो—बाह बड़ दिव्य... बहुत स्वादिष्ट... बाह बोआसीन अहाँ तऽ अपूर्व भोजन बनबैत छी... बाह... बाह...

रीता—घूटर भाई। अहि मे हम बिछु नहि केलौं... ई सब अहि छोड़ीक बनायल अछि।

घूटर—अँय... ई छोड़ी के ?

रीता—हमर पापाक जे भंसिया छथि तकरे बेटी छै रश्मियाँ... हे गै रश्मियाँ जो जऽग मे पानि मेने आ।

घूटर—संस्कारक असर छै—संस्कारक असर छै...

(ओमहर रश्मियाँ जऽग लऽ कऽ आवि रहल अछि कि जऽग खसि पड़ैत छै। रीता बड़ि कऽ ओकर केश पकड़ि कऽ गाल पर थापर सँ मारैत)

रीता—तोरा सूझैत नहि छी। खाली बदमाशी। तेहेन मारि मारबो ने... सो से घर गंदा कऽ देलक...

रश्मियाँ—हम की कोनो जानि कऽ खसेलौं ए ?

रीता—फेर मुँह लागल जबाब... (तरा तर मारऽ लगैत छथि)

(रश्मियाँ कानऽ लगैत अछि)

नरेन्द्र—अरे किएक बेचारी के मारि रहल छियँ ?

रीता—मारियँ नै तऽ की ? कोरा मे तऽ कऽ दुनार करियँ ? ई सब लातक देवता अछि... बात सँ सुनि नहि सकैत अछि...

नरेन्द्र—ओफ... करू जे मोन हुए से...

रीता—(रश्मियाँ सँ) चल आब मुँह की देखैत छै ? जो कपड़ा आनि क' पोछ सो से घर...

घूटर—बोआसीन—नरेन्द्र के माँछ दिथीन—एक आय कुटिया हो तऽ हमरो देब...

रीता—हँ-हँ रहत किएक नजि (जाइत छथि आ माछ आनि कऽ दैत छथिन)

घूटर—बाह... अहि ठाम तऽ माछ बड़ सुन्नर भेटैत छह तोरा सभके... हो एतहि एकटा बड़ियाँ घर बना लेह... हमहूँ सब कहियो काल मास दू मास आवि कऽ रहब

नरेन्द्र—भाई घर बनोनाई एतेक आधान नहि—अजन तऽ हम नोकरी मुखे केलौं अछि... पहिने गामक घर...

घूटर—छी: छी:। गामो आव रहबाक जोगरक रहि गेल अछि... हो बनेबाक छ तऽ एतऽ वनाबह। तोरा कथिक दिक्कत... अपने एतेक पैस आफिसर छह... आ ताहू सँ नहि तऽ इनजीयर साहेब जँ चाहिय तऽ आइये बनबा देखुन।

रीता—पापा... हँ... कोन मुँह सँ पापा के कहबनि... पहिने ओ पचास हजार...

नरेन्द्र—रीता... अहाँ नै चाहैत छी जे हम भरि पेट भोजन करी ? बेर-बेर पचास हजार... (उठि कऽ भीतर पलि जाइत छथि फेर हाथ ओ कऽ बाहर अबैत छथि। संग मे जेक बूक आ पास बूक छनि)। लियऽ ई पासबूक आ बैस कऽ चाटू... (बाहर दिस प्रस्थान)

रीता—नरेन्द्र... सुनु तऽ... ओफ... हमर तऽ करमे जरल अछि... भरि पेट भोजनो नै केलनि...

घूटर—आ... हा... हा अपन कर्म के दोष जुनि दी... दुर्गा... दुर्गा जे होइत छैक छे ठीके होइत छैक

(फोनक घंटी टनटना लठैत अछि। रीता बड़ि कऽ फोन उठबैत छथि।)

रीता—हेलो। Mrs. Narendra speaking.

.....

ओहो... नमस्ते

.....

जी

.....

जी हाँ। वे तो अभी-अभी बाहर निकले हैं।

.....

जी कह दूँगी।

.....

जी चार-पाँच दिन के लिए

.....

है

... ..

जी नमस्ते।

रीता—नरेन्द्र के चार पाँच दिन के लेल दूर में जाय पड़तनि। हिनकर साहेबक फोन छलनि

घूटर—अच्छा बीआसीन घबरेवाक कोनो बात नै। तबधरि हम तऽ रहबे ने करव... एक आघ कुटिया

रीता—हँ हँ नने अवत छी

घूटर—बीआसीन म'छक मूढ़ा तऽ फलहु देखबा में नहि आयल

रीता—मूढ़ा खाइत छी अपने की ?

घूटर—दुर्गा-दुर्गा बीआसीन हमर सार कहैत छथिन जे जेने जाय मूढ़ा तकरा माय में भरल कूड़ा... जेतक हो सभ नेने ने आउ...
(रीताक प्रस्थान... प्रकाश बन्न)

दसम दृश्य

(भोरक दृश्य। रश्मियाँ घर में बाढ़नि दऽ रहल अछि। दोसर कम से घूटरक आँखि मिरैत प्रवेश।)

घूटर—दुर्गा-दुर्गा... नै रश्मियाँ एक गिलास जल पियो।

(रश्मियाँ जइत अछि आ जल आनि कऽ दैत छनि)

घूटर—दुर्गा-दुर्गा... रश्मियाँ मेम साहेब उठलखुन ?

रश्मियाँ—नै... सुतले छथिन। आई साहेब नै छथिन ने तऽ दस बजे से पहिने नै उठथिन।

घूटर—ओ... रश्मियाँ...

रश्मियाँ—जी

घूटर—एमहर सुन।

रश्मियाँ—जी... कहू

घूटर—बैस... एहिठाम...

रश्मियाँ—कहू ने की कहूँ छी...

घूटर—अरे... एहि ठाम बैस ने... हमरा लऽग

रश्मियाँ—नै सोफा पर हम नै बैसब... मेम साहेब मारती

घूटर—अरे सँह देल कऽ तऽ हमर करेब फाटि जाइत अछि। आ हा-हा फूलसन बच्ची के कोना चाण्डालिन जकाँ मारैत अछि ई भोगी। एकटा हमर नूनूक स्त्री छथि... अपनो बाल बच्चा से नीक जकाँ नोकर-चाकर के रखैत छथि।

रश्मियाँ—साहेब ई नूनू के छथिन ?

घूटर—नूनू ? हमर बेटा चाईबासा में छथि। जहिना तोहर साहेब छथुन ताहू से पैघ साहेब... सुन एकटा बात कहैत छथी... केकरो कहियही नै... नै तऽ मेम साहेब फेर मारती... नै ने कहबही।

रश्मियाँ—

घूटर—सुन तोहर ई बशा देखि कऽ बड़ दुःख होइत अछि । तौ जे तैयार हो तऽ तोरा हम चुपचाप नूनूक ओतऽ पहुँचा दियो... ओना तऽ नूनू के नोकर खाकरक कोनो कसो नै परन्ख हमरे बेटा थिकाह... कहबनि तऽ तोरो राखि लेथुन... दोसर के भले हटा देखिन... आराम से रहबे खूब नीक नीक कपड़ा-लत्ता सबक संग डानी टेबुल पर भोजना ने मारि ने पीट... बाज चलबे चुपचाप नूनूक ओतऽ चाईबासा—

रश्मियाँ—लेकिन हमर बाबू... ओकरा पता लगतै तऽ मारत

घूटर—पता लगतै कोना... हम थोड़ी कहऽ जेवँ... आब तौ सोचि ले... एहिठाम आधा पेठ पर मारि पीट खाइत रहबाक इच्छा हो तऽ बड़ बेश...

रश्मि—ये हम चलब... मुदा हमर बाबू के साहेब मासे मास पचास टाका दैत छथिन—

घूटर—गँ हमर नूनू सय टाका देखुन । से सब हम बाद मे ठीक कऽ देबो ने... तौ अखन चुपचाप रहियँ... हम जाय लागब तऽ तोरा चुपचाप नेबो चलबो... ठीक ...

रश्मियाँ—ठीक... कहिया जेवँ ?

घूटर—गँ एतैक अगुता किएक गेलैं । स्थिर रह । सब हमरा पर छोड़ि दे... जो अखन अपन काज कर... दुर्गा... दुर्गा (रश्मियाँ बाढ़नि देखऽ लगत अछि, बाहर से दरबज्जा कुकड़केबाक स्वर ।)

घूटर—गँ रश्मियाँ देख तऽ... के छी ।

रश्मियाँ—दूध बला हतै... (बढ़ि कऽ दरबज्जा खोलैत अछि फेर आबिकऽ) देखियो दू तीन गोटे छै । (घूटर बढ़िकऽ दरबज्जा लग जाइत छथि फेर)...

घूटर—अरे अरे मास्टर... चन्द्रकान्त बाबू... जाउ आउ मास्टर की हाल केने छह... (रोमियाह मास्टर साहेब के चन्द्रकान्त बाबू पकड़ने भीतर अनैत छथिन । पाछाँ-पाछाँ गेनालाल समान लऽ कऽ अबैत अछि)

चन्द्रकान्त—भाई एतहि... ताघरि... एहि सोफा पर पड़ि रहू (मास्टर के उकासी आ बर्ष पर शान केने छनि । ओ सोफा पर पड़ि रहैत छथि । देना समान राखि कऽ मास्टरक पैर दयाबऽ लगत अछि ।)

मास्टर—ने... ना... मरि राति तौ दूने मे जगले छैं । कोनो कोना मे चुपचाप

पड़ि रह... । घूटर भाई... नरेन्द्र कतऽ छथि ? (गेना जो कऽ एककाल मे पड़ि रहैत अछि)

घूटर—नरेन्द्र तऽ टूर पर गेल छथि । हमरो कि भेट भेल नीक जकाँ । मुनुक कऽ ओतऽ से आपस होइत रही तऽ सोचलहुँ हिनको सभ से भेट केने चली । हम एमहर एलौं आ' ओ ओमहर टूर पर । जबदस्ती हमरा रोकि लेलनि जे हम आपस अबैत छी तखन जायब । तोरो हाल कहिति-यनि ततबो समय नै भेटल ।

चन्द्रकान्त—घूटर । हाल समाचार कहबा मे माल एक से दू मिनट लगत छैक... खैर, नरेन्द्रक आङ्गन से तऽ छथिन ने ?

घूटर—हँ... हँ सूतल छथिन... हम अखने उठा दैत छथिन ।

चन्द्रकान्त—अहाँ उठेबनि ?

घूटर—नै... नै हमर कहबाक माने ई जे-उठबा दैत छथिन... रश्मियाँ...

रश्मियाँ—जी...

घूटर—जो अपन मेम साहेब के उठा दहुन । कहुन गँ जे गामसँ मास्टर साहेब आ चन्द्रकान्त प्रोफेसर आयल छथि ।

(रश्मियाँ भीतर जाइत अछि आ कनेकाल मे रोता के नाइटगाउन पहिरने प्रवेश)

रोता—घूटर भाई किएक हमरा उठबा बेलहुँ... के आयल अछि ?

घूटर—अरे रे बीआसीन भीतरे रहू मास्टर आयल अछि

(रोता हड़बड़ा कऽ पर्दाक अड़ भऽ जाइत छथि)

चन्द्रकान्त—बीआसीन । हम प्रोफेसर चन्द्रकान्त । हिनकर भँसूर के जबदस्ती गाम से उठा कऽ अनने छी । नरेन्द्र तऽ नज्जि छथि । ताहि हेतु ई कने नीक जकाँ मुनि लेथु । मास्टर साहेबक स्थिति आइ केँ मास से बढ से बढतर भेल गेलनि अछि । पोद्दार डाक्टरक हिसाब ई टी० बी० थीक । परन्ख, हमरा इ बिश्वास नहि । भाई के कोनो आओर गंभीर रोग छनि तकर शंका अछि । तँ जबदस्ती हम लऽ अनतियनि अछि... भाई हम मुनिभर्सीटी मे आन मितक ओतऽ चलैत छी हुनको से परामर्शकऽ कोनो नीक डाक्टर से देखेबाक व्यवस्था करब ।

मास्टर—भाई अहाँ किएक एतेक परेशान भऽ रहल छी । बीआसीन छथिहे...हूँ एक दिन मे नरेन्द्र सेहो आवि जेताहूँ...

चन्द्रकाश—ठीक छै भाई...हम संझा काल आयब ।...। बीआसीन हिनकर भोजन भात मे काफी संयमक आवश्यकता छनि...वेश, भाई तऽ हम चलैत छी...हँ घूटर, अहाँ तऽ एतहि रहब...भाई के वेशी दुर्गापाठ जुनि सुनेबैनि । (प्रस्थान)

घूटर —दुर्गा...दुर्गा...कने पढ़ि लिखि की गेल ई परफेसर अपना के सभसँ काबिल मुझैत अछि ।

(रश्मियाँक प्रवेश)

रश्मियाँ —साहेब—अहाँ के मेम साहेब बजबैत छथि ।

(घूटर भीतर जाइत छथि आ' फेर कनेकाल मे आपस अबैत छथि ।)

घूटर —मास्टर...उठह...बीआसीन कहैत छथिन जे पाछुबला घर मे अपन ओरिया बिस्तर लगेवाक लेल । उठह...रे गेना...गेना...केहेन मिसम मेह भऽ कऽ सुति रहल तुरसो... (पैर सँ ठेसैत) रे गेना...गेना...

मास्टर —पैर सँ नहि घूटर भाई...पैर सँ नहि । ओकरा फूकलाक बेटा जुनि बूझू...ओ हमर बेटा सँ कम नहि...गेना...गेना ।

गेना —(हड़बड़ाइत उठैत) जी...जी मास्टर साहेब

मास्टर —उठ चल... ।

गेना —कतऽ मास्टर साहेब ?

मास्टर —चल ने पाछू बला घर मे हमरा पहुँचा दे । तकरा बाद तौ मुँह हाथ धो कऽ बीआसीन सँ जलखँ लऽ कऽ खा लिहें... (गेना मास्टर के सहारा वऽ उठबैत अछि घूटर दुर्गा-दुर्गा करैत छथि कोनो सहारा नहि दैत छथि)

घूटर —रश्मियाँ, तौ मास्टर के पाछू बला घर मे लऽ कऽ चल...हम अबैत छी ।
(मास्टर, गेना आ' रश्मियाँक प्रस्थान । रोताक प्रवेश)

रोता —घूटर भाई...आब की करी हम ?

घूटर —बीआसीन अहाँ निश्चित ने रहू । नरेन्द्र के आबऽ दियोन, ओ डाक्टर, ताबटर सं देखैथिन...तकरा बाद ने किछु...

रोता —हँ...सह । अहाँ जे नहि कहितहुँ तऽ आइ हम हुनका अही घर मे राखि

लितियैनि...दाप रे तखन तऽ बड़ा अनय होइत...हमरा सभक टी० बी० भऽ जाइत ।

घूटर —दुर्गा-दुर्गा...बीआसीन...मास्टरक घारी-बाटी गिलास सभ अलग कऽ दियोन ।

रोता —घूटर भाई !...परन्च नरेन्द्र के तऽ तामस भऽ जेतैनि ।

घूटर —अरे अहाँ निश्चित ने रहू । हम सब सम्हारि देब । हे बीआसीन...एमहर सुनू...अहाँ के कहि दैत छी...मास्टर के टी० बी० ती० बी० नहि छैक, पोद्दार डॉक्टर हमरा गामे मे कहने छल जे मास्टर के कैंसर छै ।

रोता —कैंसर !

घूटर —हँ, ताहि दुआरे ओ चन्द्रकाश परफेसर के जोर दऽ कऽ एतऽ पठबैलकनि अछि । परफेसर के सेहो बुझल छै, परन्च, मास्टर के टी० बिये कहने छै पोद्दार डॉक्टर...

रोता —दाप रे...हमर तऽ करमे जरल अछि...कतऽ पापा बियाह कऽ देलनि...अखन बियाह भेना सालो नहि पुरल अछि आ' ई कैंसर बला सभक फेरा मे पढ़ि गेलहुँ...हम आब एतऽ नहि रहब । आइये पापा लग चलि जैब ।

घूटर —दुर्गा-दुर्गा...बीआसीन एतेक अगुनाइ जुनि । नरेन्द्र के आवि जाय दियोन...तखन कोनो फौसला करब । जाउ भोजन भातक ओरियाओन करवाउ मास्टर आ' ओकरा संग एकटा टेलहा जे छै गेना, तकरो ने भोजन बनबऽ पड़त आइ सँ ।...हम कने मास्टर के देखने अबैत छियै, दुर्गा...दुर्गा (प्रस्थान)

रोता —(किछु सोचि कऽ फोन लगवऽ लगैत छथि)
हेलो...हेलो...हँ पापा...हँ...अहाँ जरदी एतऽ आउ...नँ आउ तखन कहब...कहिया ?...परसू...अथव्य

(प्रकाश बन्न होइत अछि)

ग्यारहम दृश्य

(सर्जेंट कमक दृश्य। एकटा छाट पर मास्टर परल छथि।)

गेना पर जाति रहल छनि। रक्षियां ठाढ़ अछि।

घूटर — (प्रवेशक संग) की हो मास्टर, जगह पसिन्न छह कि नै ?

मास्टर — घूटर भाई, ई तऽ ...

घूटर — हें ही मास्टर ई तऽ नोकर-चाकर के रह्यवला घर छें। बीआसीन के कोन ज्ञान छनि से नहि जानि। लाख बुझेलियनि जे मास्टर के कतेक दुःख हेतनि तऽ ओ कहऽ लगली जे अई घर मे कोना रक्षियनि। टी० बी० छनि आर नहि जानि कोन-कोन बिमारी छनि। उऽर होइत छनि कहीं हुनको सभके ने पटि जाइन। हमर तऽ करेज फाटल आ रहल अछि दुर्गा दुर्गा (प्रस्थान)

मास्टर — ओह... घूटर भाई... पता नहि आब कतेक दिन रहव एहि संसार मे... एबाक एक्कोरती इच्छा नहि छल। नरेक भोजी आ ई चन्द्रकांत भाई ठेलिठालि कऽ जबरदस्ती पहुँचा देलनि... आह... आह... (खूब जोर से पेट मे दर्द उठैत छनि)

गेना... गेना... पानि... पानि

गेना — मास्टर साहेब... मास्टर साहेब

(ता धरि रक्षियां ओतर सँ जल आनि कऽ देत छनि। मास्टर जल पिबैत छथि। कते काल नाब शान्स होइत छथि।)

मास्टर — गेना... रो ई दर्द... ई दर्द प्राण तऽ कऽ छोड़त...

गेना — मास्टर साहेब... अहाँ आराम करू... हम साथ बना दैत छी (साथ दबाबऽ लगैत अछि)

रक्षियां — तोहर नाम गेना छी ?

गेना — हें।

रक्षियां — आब तौ सभ एत रहबो ?... हम एहि घर मे रहै छी... केहेन छें मेम साहेब जे भाई के नोकर बला घर मे ठेल देलकै यै... (कहेत प्रस्थान)

गेना — हम मास्टर साहेब के एतऽ नहि रहऽ देखनि। मास्टर साहेब... मास्टर साहेब।

मास्टर — हें...

गेना — चलू एतऽ सँ। गाम चलू अहाँक बीनती हमरा भीका नहि लगैत अछि।

मास्टर — गेना... गेना तौहीं हमर सभ किछु छें... गेना, भगवान माहुर सभ भनो-कामना पूरा करथुन...

गेना — मास्टर साहेब... हम अहाँक खूब सेवा करब भगवान के कह्यनि लहो गामे मे नीके भऽ जैब।

मास्टर — गेना... आबि गेलहुँ तऽ पू चाँद बिन पामि जा... तरे आनि जायत अछि, तऽ भेट भऽ जायत। (प्रकाश लग्न)

बारहम दृश्य

(सर्जेंट कम मे प्रकाश, रक्षियां संग नरेन्द्रक प्रवेश। रक्षियां हाथ सँ हथारा कऽ कऽ देखबैत छनि। गेना मास्टरक पर दबबैत रहैत छनि। नरेन्द्र बढि कऽ पर पकड़ि लैत छथि।)

नरेन्द्र — भाई, भाई हमरा माफ कऽ दिय भाई... ई की हाल भऽ गेल अहाँक भाई... ?

मास्टर — नरेन्द्र... नरेन्द्र...

नरेन्द्र — भाई अहाँके एहिठाम के रखनेलक ? हम ओकरा कहियो क्षमा नहि कऽ सकैत छी। भाई...

मास्टर — नरेन्द्र होश मे आब... हम... हम तऽ कष्ट मे छीहें... अहाँ एना करब तऽ हमरा बड़ दुःख हैत।

नरेन्द्र — भाई... अहाँ एतेक बीमार छी... एकोटा पत्र नहि...

मास्टर — नरेन्द्र... हम आ' अहाँक भीजी तऽ कम सँ कम दसटा पत्र देने होयब... अहाँक जबाब नहि भेटस...

नरेन्द्र — दसटा पत्र ! सत्ते कहैत छी भाई... हमरा हाथ मे एकोटा पत्र नहि भेटल... भाई पहिने उठू घर मे चलू....

मास्टर — नहि नरेन्द्र... हम एतहि ठीक छी...

नरेन्द्र — नहि भाई नहि... एतेक पैघ दण्ड नहि दिय हमरा ।

मास्टर — नरे... बच्चा जकाँ जुनि करू... बीप्रासीन जे केलनि से नीके केलनि अछि... हम एतहि ठीक छी आब अहाँ आवि गेलहु... कोनो नीक डाक्टर सँ देखा दिय जे जल्दी सँ आपस गाम चलि जाइ ।

नरेन्द्र — ई की कहि रहल छी भाई ?... हम जनैत छौं अहाँ हमरा सँ बड़ तमसा-यल छी... परन्च, आब जा धरि अहाँ पूर्णरूप सँ ठीक नै भऽ जैव... हम नहि जाय देब... भाई उठू... चलू घर मे...

मास्टर — नरे... जिव नहि करी... आह... आह... हम एतहि ठीक छी...

नरेन्द्र — ठीक छै... तऽ हमहूँ एतहि रहब... जतहि अहाँ रहब... सँह हमरो घर थीक ।... भाई... अहाँक मोन एतेक खराब...

मास्टर — धीरे-धीरे भऽ गेल... ई खींखी आ पेटक दर्द तऽ बुझाईत अछि प्राण लऽ लेत... हमरा तऽ अयबाक ईच्छा नहि छल परन्च अहाँक भोजी आ चन्द्रकान्त भाई...

(चन्द्रकान्तक प्रवेश)

चन्द्रकान्त — की यी भाई... हमरा किएक याद कऽ रहल छी ? ओह नरेन्द्र अहाँ आवि गेलहु ।

नरेन्द्र — जी आविए रहल छी । (चन्द्रकान्त के एक विस लऽ जा कऽ) चन्द्रकान्त भाई... भाई के की भऽ गेल छनि ? किछु...

चन्द्रकान्त — घबराउ जुनि... कोनो खास नहि । गाम घरक गऽय, ने नीक डाक्टर, ने नीक दवाई... धीरे-धीरे रोग बढ़ि गेल छनि... अहाँ जाउ फेश भऽ जाउ तकरा बाद बिचार-बिमर्श कऽ कऽ नीक डाक्टर सँ कन्सल्ट केल जेत ।

नरेन्द्र — हम की फेश हेब... हम ठीके छी...

मास्टर — नरे... जाउ कपड़ा लत्ता बदलि कऽ आउ... जाउ

नरेन्द्र — जी ' जी (प्रस्थान)

नरेन्द्रक प्रवेश

(नरेन्द्र आवि कऽ आपस दुख भऽ गेल जेवन जानैत छी । हुनका अपेक्षा बड़ा ग रूम मे राखल छनि । रोगिनी अपन आँगन कऽ देन छनि । ताबान् रीताक घूटर भाईक संग हँसैत प्रवेश । संग में हु आँखा देकऽ के सुनिब कऽ रहल अछि जे ओ मार्केटिंग कऽ कऽ आवि रहल छनि तबसु मऽ दुख भईत छनि)

रीता — हाय नरेन्द्र... बुझाईत अछि अहाँ आवि रहल छी... देखु ने आइ पापा आवय बला... आपस तऽ गाम घर मे गेलौक जेल आ' मोताक लेल किछु कपड़ा लऽ गेलौक... आपस तऽ गाम घर मे गेलौक जेल आ' मोताक लेल किछु कपड़ा लऽ गेलौक... आपस तऽ गाम घर मे गेलौक जेल आ' मोताक लेल किछु कपड़ा लऽ गेलौक... आपस तऽ गाम घर मे गेलौक जेल आ' मोताक लेल किछु कपड़ा लऽ गेलौक...

नरेन्द्र — रीता, ... । हमर प्रस्ताव गऽ जाय के समझ कऽ जाय... तबसु मऽ अहाँक एको पाइ लाग नहि भेल ? हमर अनुपस्थितताक पड़न ताजायब फायदा । अहाँ... ?

रीता — ताजायज फायदा की ? आ अह मे लाग केहेन । हुनका जेहेन जेहेन बिमारी छनि... एहिठाम रखवा मे हमरा भऽ जाइत तऽ ?

नरेन्द्र — रीता... अहाँ एतेक हृद तक नीचाँ खसि सकैत छी से हम सपना मे नै सोचने छतहुँ । हमर भाई सर्वोन्त क्वाटर मे दर्द सँ तड़पि रहल छनि आ' अहाँ अपन माय आ' बहिनक लेल कपड़ा खरीदऽ लेल गेल रहौ... छी—छी छी

घूटर — गुर्ग... दुर्गा... ही नरेन्द्र कने शान्त भऽ आह ।

नरेन्द्र — की शान्त भऽ जाउ । हमरा देहमे तऽ आँग लागल अछि... हिनकर तऽ बुद्धि मारल गेलैनि अछि... परन्च, घूटर भाई अहाँ तऽ एतऽ रहौ... अहाँ तऽ हिनका बुझा सकैत छलियनि

रीता — ह... ह... हमर बुद्धि मारल गेल... तँ हम कँसर आ टी० बी० बला के अवन घर मे नै रखबै आ नै तऽ अहाँ के ओतऽ जाय देब ।

नरेन्द्र — कँसर ?

रीता — ह... ह... कँसर...

नरेन्द्र — हे भगवान ! ई की सुनत छी । हमर देवता सन भाई के कंसर ।
(रोता सँ) अहाँ बाण्डालिन छी । हमर भाईके एहि स्थितिक लेल
अहाँ जिम्मेवार छी । कहूँ हमर भाईक चिट्ठी सभ हमरा किएक नहि
देलहुँ । बाजू — बजैत किएक नहि छी ?

(घूटर चुपचाप खसकि जाइत छथि)

रोता — चो । चिट्ठी को न चिट्ठी ?

नरेन्द्र — झूठ नहि बाजू । रश्मियाँ सँ पता लागि गेल अछि । बराबर चिट्ठी
अजैत छल परन्च, आइ धरि । आइ धरि हमरा हाथ मे एकोटा चिट्ठी
नहि भेटल । किएक बाजू । कतऽ अछि चिट्ठी सभ ?

रोता — चिट्ठी सभ के हम फाड़ि देलौं —

नरेन्द्र — हमर भाईक जिनगी आ मृत्युक सबाल छल आ' अहाँ चिट्ठी सभके
फाड़ि देलहुँ ।

रोता — हूँ जिनगी आ मृत्यु । अहाँक भाई जिवथि या मरथि ताहि सँ हमरा
को ?

नरेन्द्र — रोता । (कसिक गाल पर थापर मारैत छथि)

रोता — अहाँ । अहाँ हमरा थापर मारलहुँ । अहाँक ई माल जे हमरा थापर
मारब (खूब धोर सँ कानऽ लगैत छथि । नरेन्द्र निकलि कऽ चलि
जाइत छथि । प्रकाश धीरे-धीरे बन्द होइत अछि ।)

चौदहम दृश्य

प्रकाश सभैत रुम मे । नरेन्द्र अजैत छथि आ' आबि कऽ मास्टर लऽन बैसि
रहैत छथि । ओतऽ घूटर पहिने सँ रहैत छथि

नरेन्द्र — (चन्द्रकान्त सँ) भाई कने । एमहर सुनू तऽ । भाई कि ई कंसर ?

चन्द्रकान्त — नरेन्द्र । एतेक हतोऽसाहित जुनि होउ । हँ पोद् र डाक्टर के सत प्रति-
शत शंका छनि जे ई कंसर थीक । तँ हम मास्टर के जबऽस्ती उठा कऽ
लऽ अनलियनि । अहाँक एक्सरे मे हम कोनो डाक्टर सँ रीखा सकैत
रहियनि परन्च, हम अहाँक प्रतीक्षा करव उचित नूसल ।

(रश्मियाँक हाँफैत प्रवेश)

रश्मियाँ — साहेब । साहेब । मेमसाहेब । मेमसाहेब ।

नरेन्द्र — अखन हमरा फुर्सत नहि अछि । जो कहि दिहुन जे हम भाई के लऽ कऽ
डाक्टर के ओतऽ जा रहल छी ।

रश्मियाँ — साहेब । मेमसाहेब शीशी मे सँ कीनदन दबाई खा लेलखिन । आ' ।
आ' एकदम दर्द सँ छटपटा रहल छथिन । कहैत छथिन हम मरि जैब
हम मरि जैब ।

नरेन्द्र — की ?

मास्टर — नरेन्द्र जल्दी जाउ । पहिने बीआसीन के देखियनि । (नरेन्द्र आगाँ आगाँ
आ पाछाँ तऽ चन्द्रकान्त आ घूटर सेहो जाइत छथि)

(प्रकाश बन्द)

पन्द्रहम दृश्य

(सर्भेन्ट रूम में प्रकाश, चन्द्रकान्त सेहो बैंगल खिंचे)

चन्द्रकान्त—भाई बुझू तऽ आइ बीआसीन बचि गेली आ' प्रतिष्ठा सेहो बचि गेल । कहूँ तऽ बीआसीन ई की केलनि । पति-पत्नी में खगड़ा संवाद बात न होइत छै जे बीआसीन छोट-छीन बात तऽ कऽ सोझ जहर खात कऽ आत्महत्या करऽ गेलीह । गनीमत छलै जे ओ मरुछर मारऽ बला बचाई रहै सेहो पुरान, बेसी स्ट्रांग नहि । नहि तऽ आइ जुलूम कऽ आइत । आ' ई नरेन्द्र के सेहो नेनमति नहि गेलनि अछि । मारि...पीट...छी... छी...छी...

मास्टर—भाई भाई... भाई बड़ दर्द करैत अछि आइ गेना... गेना... गेना पानि पियो... (गेना पानि आनि क दैत छन्हि) आइ... भाई... भाई एहि सभ फसादक जड़ि हम छी... हमरा... हमरा... आइये गाम पहुँचा दिय...

चन्द्रकान्त—भाई... अहाँक स्थिति ई नहि अछि जे अहाँ गाम जाइ...

मास्टर—नहि भाई... नहि आब हम अहाँक गप्प नहि सुनब । आब जे हैत से गामे में हैत—

घुटर—(प्रवेशक संग) ठीके ही मास्टर... हमहूँ आब एक क्षण नहि रहि सकैत छी... दुर्गा... दुर्गा एहेन... एहेन कांड सभ होइत अछि...

चन्द्रकान्त—काण्ड... है... मास्टर एहि सभ फसादक जड़ि अहाँ अपनाकेँ बुझैत छी, परन्च धास्तव में फसादक जड़ि छथि... यह घुटर...

घुटर—दुर्गा... दुर्गा... ई की कहैत छी यी परफेसर?

चन्द्रकान्त—ठीक कहैत छी... पहिने तऽ मास्टर के पोटी पाटि कऽ इंजिनियर साहेबक ओतऽ विवाह करबौनाई । झूठ-मूठ सौंसे प्रचार जे एक लाख टाका मास्टर लेलनि भाईक विवाह में ।... आ' ताहूँ सँ अहाँक पेट नहि भरल तऽ एहिठाम बीआसीन के बुद्धि देनाइ...

घुटर—झूठ... एकदम झूठ... अहाँक सत्यानाश हो जे हमरा पर एहन कलंक...

चन्द्रकान्त—सत्यानाश तऽ सौंसे गामक कऽ रहल छियै अहाँ । ठीके अहाँके लोक लौंगिया मिरचाइ कहैत अछि... बापरे एहन कड़ु जे सोझ करेजा तक के बेध दिए...

४७

घुटर—देखू परफेसर... अहाँ हृद सँ आर्गा बढ़ि रहल छी । मास्टर अपन मोन सँ भाईक विवाह ठीक केलनि पैंध आदमी कतऽ । आब ओकर फल भुगति रहल छथि तऽ हमर कोन दोष...?

चन्द्रकान्त—है... ई दोष तऽ मास्टरक अवश्य छनि जे ओ स्टेटस ताकय खगलाह... इ नहि बुझलनि जे स्टेट्स बलाक बेटी हिनकर टूटली मरैया में कोना कऽ रहतैनि... आइ कालि... दहेजक एकटा इहो रूप अछि जे कतेको घर के बर्बाद कऽ दैत अछि... परन्तु, घुटर अहाँक प्रतिभा विलक्षण अछि...

मास्टर—भाई चुप भऽ आउ...

चन्द्रकान्त—नहि भाई... आइ बहुत दिन सँ हिनकर चालि हम गाम सँ एतऽ घरि देखैत चलि आबि रहल छी... ओहि दिन जखन रश्मियाँ सँ पता लागल जे यह घुटर बीआसीन के समझा बुझा कऽ अहाँ के एहि सर्भेन्ट बघाटर में रखबैलैनि तऽ हमर तऽ देह जरि गेल... मोन तऽ होइत अछि हिनका तत्त मारि मारी जे...

घुटर—परफेसर... तोरो देख लेबौ... बड़ जे काबिल...

चन्द्रकान्त—खबरदार जे फेर आगू बजलौ... अरे अहाँ हमरा की देखब? गामक कतेको घर में अहाँ आगि खगौने छी... हमरो घर बर्बाद करऽ चाहब से नहि हैत... परन्च, आब जँ अहाँ एको शब्द बजलौ तऽ हम अहाँक टाँग तोड़ि देब भागू... भागू एतऽ सँ...

(घुटर के धक्का दऽ कऽ बाहर करैत छथि)

मास्टर—भाई नाहक में...

चन्द्रकान्त—किछु नाहक नहि... ई एहि पातक छथि । भाई नरेन्द्र के आबऽ दियोन... हम अहाँके एतऽ सँ लऽ चलब... नसिग होम में राखब... यह नै हैत जे एकाध बिगड़ा गामक जमीन बेचऽ पड़त... बेचब... मितक लेल तऽ लोक की की नञि करैत अछि...

मास्टर—भाई... भाई

(पेट में दर्द उठि जाइत छनि... चन्द्रकान्त आ गेना सम्हारैत छथिन । प्रकाश बन्द होइत अछि)

सोलहम दृश्य

(ड्राइंग रूमक दृश्य घूटर अपने कपड़ा लुत्ता सरिया रहल छथि । जयबाक उपक्रम छनि... दिवाकर बाबूक रीत... रीता करते प्रवेश घूटर के देखितहि...)

दिवाकर—आ-हा-हा-हा नमस्कार—नमस्कार घूटर बाबू बहुत दिन पर भेंट भेल ।
अरे अपने इ झोड़ा झपटा..."

घूटर—बहुत भऽ गेल ... बहुत भऽ गेल... आवहम आओर बीजती बर्दाश्त
नहि कऽ सकैत छी... हमरा जाय दिय... (जेबाक उपक्रम मे)

दिवाकर—अरे... एना कोना चलि जायब । हम एलो आ' अहाँ चलि जायब...
के केलक अहाँक बीजती ? की रीता सं कोनो...?

घूटर—दुर्गा... दुर्गा ओ बेचारी तऽ साक्षः दुर्गा छथि । ... कतेक खानिर
केलनि परन्च...

दिवाकर—कतऽ छथि रीता ? रीता... रीता...

घूटर—इनजीयर साहेब... एहिठाम घोर अनर्थ भेल अछि । बोआसीन जहर
खा लेलनि...

दिवाकर—की ? की कहैत छी ? जहर...?

घूटर—जी ! ओ तऽ बुझु जे हम एतऽ रही जे सभ बचि गेल... डाक्टर ओर
सँ एतऽ रहथि... आव सुनय बला सूइ दऽ कऽ गेल छथि... बोआसीन
ओहि घरमे सूतल छथि...

(दिवाकर ओह भाई गाँठ कहैत भीतर जाइत छथि । घूटर दुर्गा—दुर्गा
करैत रहैत छथि । कनेकाल मे दिवाकर भीतर सँ अवेत छथि)

दिवाकर—घूटर बाबू... हमरा सच-सच कहूँ... इ कोना भेल ?

घूटर—आव जाय दियो इनजीयर साहेब । भगवान के धन्यवाद दियो जे
बेटी बचि गेलीहूँ...

दिवाकर—घूटर बाबू हमरा सच सच कहूँ इ कोना भेल ? के एहि लेल जिम्मेदार
अछि ... नरेन्द्र कतऽ छथि ? अहाँ बजैत किएक नहि छी ?

४६ १

घूटर—की बाजू ? नरेन्द्र तामसे बोआसीन के दू बारि थापर लगा देलनि ।

बोआसीन बर्दाश्त नहि कऽ सकलीहूँ आ' मच्छर मारऽ बला दवाई...

दिवाकर—नरेन्द्र के ई हिम्मत ! ओ हमर फूल सन बच्ची के मारलनि ? ... कतऽ
छथि नरेन्द्र ?

घूटर—धैर्य राखू... इनजीयर साहेब नरेन्द्र के कोन दोष... पता नहि मास्टर
की सभ सिखा पढ़ा देल कैनि...

दिवाकर—मास्टर... घूटर बाबू... अहाँ पहिली जुनि ब्रशाल । हमर देह मे आगि
लागल अछि... पूरा गप्प कहूँ...

घूटर—सैह तऽ कहि रहल की... नरेन्द्रक परोक्ष मे मास्टर एतऽ बारिभ दिन
आयल... बोआसीन ओकर रहबाक व्यवस्था पाछूबला घर मे करबा-
देखिन... ताहि लेल...

दिवाकर—ओ... तऽ मास्टर ओतऽ छथि... ओ की बर्झैत छथि अपना के ? (बजैत
प्रस्थान । पाछू पाछू घूटर सेहा जाइत छथि । प्रकाश बन्न)

सत्रहम दृश्य

(सर्भेन्ट क्वाटर । मास्टर पड़ल छथि । चन्द्रकान्त । गेना बिछाओन
समेत कऽ बान्हि रहल अछि । दिवाकर बाबूक हृष्टायल फुफिआयल
प्रवेश)

दिवाकर—मास्टर, अहाँ के हम नीक लोक बुझैत रही, परन्च अहाँ अप्पन स्वार्थक
लेल हमर बेटीक घर उजाड़ऽ पर लागि गेलहुँ... छी... छी... छी...

मास्टर—दिवाकर बाबू...

दिवाकर—खबर दार... अपन गन्दा जुवान सँ हमर नाम नहि लिय... आइ जे हमर
बेटी के किछु भऽ गेल रहैत तऽ हम अहाँ के गोली मारि दितहुँ । आव
नीक अही मे अछि जे अहाँ अपन रस्ता पकड़ू आ' भविष्य मे फेर
कहियो हमर बेटीक घर दिस जुनि लाकूँ...

घूटर—दुर्गा... दुर्गा... दिवाकर बाबू ? एतेक तामस ठीक नहि । मास्टर
अपनेक कुटुम्ब अछि...

दिवाकर—की कुटुम्ब यी घूटर बाबू ? कुटुम्बक इएह काज जे हमर बेटीक घर उजाड़य ?

चन्द्रकान्त—दिवाकर बाबू...बहुत काल सँ हम सुनि रहल छी...अहाँ पैघ लोक भऽ सकैत छी परन्च बुद्धि निम्न स्तरक अछि...एकटा विमार व्यक्ति सँ कोना गप कैल जाइत छैक सेहो ज्ञान नहि अछि...

दिवाकर—अहाँ हमरा ज्ञान सिखायब ? हम अहाँके नहि जनैत छी परन्च अहाँ जे क्यो होइ, हमर बेटीक घर सँ तुरत निकलि जाइ...अन्यथा

मास्टर — (उठिकऽ ठाढ़ होइत) भाई चलू...आब बहुत भऽ गेल...दिवाकर बाबू हमरा गलत जुनि बूझू...अपनेके हम बहुत जादर करैत छी...आ' तहिना बीआसीन आ नरेन्द्र सँ स्नेह अछि...

दिवाकर—अरे जाउ जाउ बहुत स्नेह देखलौं। सौंसे इलाका मे प्रचार केने छी...बहुत नीक मास्टर...बहुत दयावान...हूँ...हमर बेटीक लेल तऽ हैवान...

मास्टर — दिवाकर बाबू...अहाँ हृद सँ आगाँ बढ़ल जा रहल छी...आह...आह (दर्द उठि जाइत छनि)

चन्द्रकान्त—भाई...पड़ि रहू...

मास्टर — नहि भाई...आब की पड़ऽब...चलू। अहि ठाम आब एक-एक क्षण पहाड़ बुझाइत अछि...

दिवाकर — हूँ...हूँ...जाउ। मुदा कहि दैत छी...अबिष्य मे फेर कहियो हमर बेटीक घर दिस नहि तकब...

चन्द्रकान्त — दिवाकर बाबू अहाँ जे कऽ रहल छी तकर फल एक दिन अहीं भुगतब...अहूँ सँ बेसी अहाँक बेटी भुगतती...। परन्च, एकटा बात कान खोलि कऽ सुनि लिय...अहि घूटर सँ सावधान रहब। हिनका गामक लोक लौंगिया मिरचाई कहैत छनि। लौंगिया मिरचाई जेकरा खेबाक इच्छा तऽ सभके होइत छैक...परन्च खेलाक बाद तेहेन कड़ु लगैत छैक जे लोक के कमा दैत छै...

घूटर—दिवाकर बाबू...देखि लिय...ई प्रोफेसर अहाँक सोक्षा मे हमर केहेन बँजती कऽ रहल अछि...हमर नूनू जे एतऽ रहितथि तऽ हिनकर टीग हाथ तोड़ि कऽ भऽ दैतथि... (बजैत प्रस्थान)

दिवाकर — शान्त होउ...घूटर बाबू कने शान्त होउ... (चन्द्रकान्त सँ) अहाँ हमरा कि लोक के चिन्हायब ? पहिने अपना के चिन्हू...के लौंगिया मिरचाई अछि से हमहूँ बुझैत छी...आ' हे हमरा कि हमर बेटी के एतेक कमजोर जुनि बूझू...

चन्द्रकान्त — हँ ठीक कहैत छी...अहाँक देटी कमजोर किएक रहती...ओहो तऽ लौंगिया मिरचाई सँ कम नहि छथि...

दिवाकर — जुआन सम्हारि कऽ बाजू...नहि तऽ आइ एतऽ...

चन्द्रकान्त—दिवाकर बाबू हमर गप अपने के अधलाह लागि रहल अछि...परन्च बाद मे बुझबै जे हमर गप्पक की अर्थ।...ई घूटर सनक व्यक्ति जे प्रायः प्रत्येक गाम मे रहैत छथि...ककरो नीक नहि देखि सकैत छथि...आइ ई अहाँक प्रिय पात्र छथि परन्च, काल्ह इ अहाँक जड़ि खोइऽ लगताह। एकटा बात आओर...आने सनक सो कोल्ड पाइ बला लोक अपन पाइक जोर पर जेहेन लड़का चाहैत छी उठा अनैत छी...आ ओ लड़का आ जे संस्कारी रहल तऽ दू तरहक स्टैंडरक बीच भरि जिनगी पिसाइत रहैत अछि...ओकर वैवाहिक जीवन सुखमय नहि रहैत छैक। आशा अछी अहाँ अपन दोसर बेटीक विवाह मे अहि बातक ध्यान राखब...

मास्टर—भाई...शांत रहू...बहसक कोन आवश्यकता...चलू...

(नरेन्द्रक प्रवेश)

नरेन्द्र—भाई चलू...टैंक्सी लऽ अनलहुँ...डाक्टर सँ समय (समुर पर दृष्टि पड़ैत छनि) ओह अपने एतऽ...

दिवाकर—हँ हम एतऽ...हमरा देखि हृदास किएक उड़ि गेल...हमरा देखि कऽ अहाँ दूनू भाईक प्लान गड़बड़ा गेल की ?

नरेन्द्र—प्लान...केहेन प्लान ?

दिवाकर—वाह केहेन अनजान बनि रहल छी ? दूनू भाइ मिलि कऽ हमर बेटीक प्राण लेबापर लागल छी आ' कहैत छी कोन प्लान ?

नरेन्द्र—दिवाकर बाबू...होश मे बात करू। हमर देवता सनभाई पर एहन कलंक...

दिवाक

मास्टर—(डटैत) नरेन्द्र सभ शिक्षा घोटि कऽ दीबि गेलहुँ छी: छी: छी: ससुर
पिता तुल्य होइत छथि अहि तरहक व्यवहारक अहाँ सँ आश नहि
छल....

चन्द्रका

नरेन्द्र—भाई....भाई हमरा समा कऽ दियऽ

दिवाक

मास्टर—समा हमरा सँ नहि... अपन ससुर सँ मांगू(चन्द्रकान्त सँ) भाई
बलू....गेना उठा समान...

मास्टर

नरेन्द्र—भाई ई कि ? अहाँके डाक्टर ओतऽ लऽ जेवाक लेल हम टैक्सी अनने छी
मास्टर—ओहि टैक्सी सँ हम स्टेशन चलि जायब....

दिवाक

नरेन्द्र—नहि भाई नहि ई नहि भऽ सकैत अछि....हम अहाँके एहि हाल मे
नहि जाय देब....(पैर पकड़ि लेति छथि)

मास्टर

मास्टर—नरेन्द्र होश मे आउ....हमरा जयबाक अछि....गाम मे अहाँक भोजी
प्रतीक्षा करैत हेतौ....

चन्द्रका

नरेन्द्र—नहि भाई नहि....

मास्टर—अहाँके अहाँक भोजीक सप्यत । हमरा जुनि रोकौ....

मास्टर

नरेन्द्र—भाई !

मास्टर—हे....अहाँ जाउ बौआसीन के देखियौन....हुनका हमरा अएला सँ बहुत
कष्ट भऽ गेलनि....। गेना....गेना....कने हमरा सहारा दे (गेनक कहौ
पर हाथ राखि बढ़वाक उपक्रम)

दिवाक

नरेन्द्र—(मास्टर के पकड़ैत) भाई हम अहाँके पहुँचा दैत छी....

चन्द्रका

मास्टर—नहि नरेन्द्र अहाँ जाउ आब तऽ इएह गेना हमर सहारा थीक....भाई
बलू.... (गेनाक कन्हाक सहारा लेत मास्टर बा' पाछु पाछु चन्द्रकान्तक
प्रस्थान करबाक मुद्रा । नरेन्द्र खाट पर बैसि कानय लगैत छथि....
सभ पाव स्थिर.... प्रकाश बन्न होइत अछि

समाप्त